अक्तूबर 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

अक्रम अर्थात् चौबीस तीर्थंकरों का निर्मल मार्ग, बिल्कुल प्योर!
प्योरिटी! ज़रा भी इम्प्योरिटी नहीं, सौ प्रतिशत गोल्ड!

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 144
अक्तूबर 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 100 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 100 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अक्रम में चाहिए लक्ष्मी, विषय व मान की प्योरिटी

संपादकीय

परम पूज्य ज्ञानीपुरुष दादा भगवान (दादाश्री) ने आत्मधर्म के सर्वोत्तम विवरण के साथ-साथ व्यवहार धर्म को भी गहनता से समझाया है, ताकि व्यवहार और निश्चय दोनों ही पंखों द्वारा समांतर रूप से मोक्ष मार्ग में प्रगति की जा सके। जीवन व्यवहार में धर्म या अध्यात्म में आगे बढ़ने के लिए, प्योरिटी की आवश्यकता है लेकिन अभी काल ऐसा है जहाँ मन-वचन-काया की एकता नहीं है। प्योर होने की भावना होने के बावजूद भी प्योरिटी नहीं रह पाती। हमें अक्रम विज्ञान के माध्यम से ज्ञान मिला, मोक्ष का ध्येय बन गया लेकिन यदि उस मोक्ष मार्ग में प्योरिटी होगी तभी हमारा ध्येय सार्थक होगा। अब ऐसी प्योरिटी कैसे प्राप्त करें, उसकी संपूर्ण समझ दादाश्री द्वारा उद्बोधित की गई है, ताकि महात्माओं में प्योरिटी पूर्वक व्यवहार करने की दृष्टि खुले।

इस काल में, अगर व्यवहार में सब से विशेष प्रधानता मिली होगी तो वह है लक्ष्मी, विषय और मान को! अक्रम मार्ग अर्थात् प्योरिटी का मार्ग...! दादाश्री के जीवन व्यवहार में प्योरिटी के सिद्धांत इस तरह से समाए कि उन्होंने धर्म में, व्यापार में, गृहस्थ जीवन में, लक्ष्मी, विषय और मान के संबंध में खुद ही प्योर रहकर जगत् को आदर्श व्यवहार दिखाया। दादाश्री कहते हैं कि यदि खुद व्यवहार में प्योर हों, जहाँ विषय-कषाय से संबंधित विचार ही नहीं हों और संपूर्ण रूप से भीख चली जाए तभी इस जगत् का वास्तविक स्वरूप समझ में आएगा।

उन्होंने अपने जीवन में स्वयं के खर्च के लिए कभी किसी का एक भी पैसा स्वीकार नहीं किया। खुद के ही पैसे खर्च करके वे हर एक गाँव में सत्संग करने के लिए जाते थे। उन्होंने गृहस्थ रूप में और शादी-शुदा होने के बावजूद स्त्री परिग्रह से अपरिग्रही रहकर, प्योरिटी सहित उच्चतम ज्ञान की दशा प्राप्त की।

युवावस्था में उन्हें अपने बड़े भाई से एक ही उलाहना मिला कि 'तुम्हारे जैसा मानी मैंने नहीं देखा'। तब उन्होंने चारों तरफ से इसकी जाँच की, ऐसा पता चलते ही कि इस मान से ही मोक्ष रुका हुआ है। फिर उन्हें मान चुभने लगा और खूब जागृति सहित मान की भीख में से भी वे मुक्त हो गए। जहाँ पर किसी भी प्रकार की भीख नहीं रहती, वहाँ पर प्योरिटी के साथ यह परमात्मा पद प्राप्त होता है।

प्रस्तुत अंक में दादाश्री ने लक्ष्मी, विषय और मान के सामने प्योरिटी प्राप्त करने के लिए चाबियाँ दी हैं। उनका उपयोग करके इन सभी भीखों मे से मुक्त होकर खुद के स्वसुख का अनुभव हो सके, इस कलियुगी व्यवहार का समभाव से *निकाल* करके वीतरागता की राह पर चल सकें, उसके सही रास्ते का वर्णन दादाश्री ने किया है जो कि महात्माओं को प्योरिटी से जीवन जीकर अंतिम ध्येय सिद्ध करने में सहायक होगा, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अक्रम में चाहिए लक्ष्मी, विषय व मान की प्योरिटी

सत्य भी कर्माधीन

प्रश्नकर्ता : जीवन में सत्य एक ही नहीं होता। घर में एक सत्य होता है, व्यापार में दूसरा सत्य होता है, कई बार, मेरा एक ही सत्य होता है और इन भाई के दो सत्य होते हैं। एक इनके जीवन का सत्य होता है और दूसरा व्यापार का सत्य होता है। जीवन का सत्य अर्थात् ये भाई घर में झूठ नहीं बोल सकते और व्यापार में सत्य बोलेंगे तो चलेगा नहीं। पिता के तौर पर जीवन का मेरा यह एक ही सत्य है जबकि इन भाई के दो सत्य, एक को रखना पुसाएगा नहीं, इनके लिए दो अलग-अलग सत्य हो सकते हैं। तो क्या सत्य दो होते हैं या एक ही होता है?

दादाश्री : हाँ, सभी जगह अलग-अलग सत्य होते हैं। व्यापार में एक होता है तो दूसरी जगह पर अलग होता है। एक ही मुश्किल खड़ी हो गई है। व्यापार में जो सत्य है, वह काल के अधीन है। सत्युग में कलियुग के जैसा सत्य नहीं था। आज का सत्य वह कलियुगी सत्य है। कलियुगी सत्य अर्थात् कपट सहित सत्य और सत्युग का सत्य अर्थात् कपट रहित सत्य। अत: यह काल के अधीन, संयोगवश है। संयोगवश व्यापार में यह सब करना पड़ता है।

ईमानदारी, वह भगवान का लाइसेन्स

प्रश्नकर्ता : आजकल यदि ईमानदारी से व्यापार करने जाएँ तो ज़्यादा मुश्किलें आती है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : अगर ईमानदारी से काम करेंगे तो एक ही मुश्किल आएगी लेकिन बेईमानी से काम करोगे तो दो प्रकार की मुश्किलें आएँगी। ईमानदारी की मुश्किलों में से छूट सकोगे लेकिन बेईमानी में से छूटना बहुत कठिन है। ईमानदारी, तो भगवान का बहुत बड़ा 'लाइसेन्स' (अधिकार-पत्र) है। ऐसे व्यक्ति का कोई नाम नहीं दे सकता। आपको उस 'लाइसेन्स' को फाड़ने का विचार आता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं दादा, लेकिन यह प्योरिटी वाली भावना, उसमें भीतर थोड़ी-थोड़ी इम्प्योरिटी घुस जाती है।

दादाश्री : भावना में इम्प्योरिटी घुस जाए तो वह क्या कहलाएगा? दूध में नमक गिरने जैसा।

प्रश्नकर्ता : तब तो फट जाएगा!

दादाश्री : नहीं। चाय नहीं बनेगी, यूज़लेस हो जाएगा इसलिए नमक नहीं गिरने देना। मेरा कहना है कि दूध कम रखना लेकिन नमक नहीं गिरने देना। अर्थात् भावना कम करना लेकिन नमक मत गिरने देना।

प्रश्नकर्ता : वह नमक किस रूप में गिरता है?

दादाश्री : यह सब जगह गलत, इम्प्योर वह सब नमक की तरह ही गिरता रहता है। इम्प्योर विचार। मन में जो इम्प्योरिटी के भाव हैं वे सब इम्प्योर नमक रूपी हैं।

ध्येय *लक्ष* में रखकर खेल खेलों

प्रश्नकर्ता : आज का टाइम ऐसा है कि इंसान खुद के छोर भी (कमाई-खर्च) भी नहीं मिला सकता। वैसा करने के लिए यदि उसे सही-गलत करना पड़े तो क्या ऐसा किया जा सकता है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, उधार लेकर शराब पीने जैसा है। उसके जैसा है यह व्यापार। कुछ अच्छा करो तो पुण्य मिलेगा जबकि इस गलत किए हुए से तो अभी टूट रहे हैं। अभी टूट रहे हैं, उसका क्या कारण है? पाप हैं, इसलिए आज कमी पड़ रही है, सब्ज़ी नहीं है, दूसरा कुछ नहीं है फिर भी यदि अभी अच्छे विचार आ रहे हों, धर्म में-जिनालय में जाने के, उपाश्रय में जाने के, कुछ सेवा करने के, ऐसे विचार आ रहे हों तो वह पुण्यानुबंधी पाप है। आज पाप है, फिर भी वह पुण्य बाँध रहा है लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए कि पाप हों और वह फिर से पाप ही बाँधें। पाप हों, कमी हो और यों उल्टा करें तो फिर अपने पास बचा क्या?

प्रश्नकर्ता : यह तो पूरा सर्कल है न! ब्लोक (बंगला), बच्चों की पढ़ाई, जीने के लिए ये सब ज़रूरतें तो यदि कुछ गलत नहीं करेंगे तो पूरा नहीं हो पाएगा। तो गलत करना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : पूरा पड़े या नहीं पड़े फिर भी आपको गलत तो करना ही नहीं चाहिए।

समझो नियमानुसार लक्ष्मी का व्यवहार

प्रश्नकर्ता : यह जो लक्ष्मी कमाते हैं वह कितनी कमानी चाहिए?

दादाश्री : ऐसा कुछ नहीं। सुबह-सुबह नहाना पड़ता है न? तब क्या कोई ऐसा सोचता है कि एक ही लोटा मिलेगा तो क्या करूँगा? इसी तरह लक्ष्मी का विचार भी नहीं आना चाहिए। डेढ़ बाल्टी मिलेगी, उतना निश्चित ही है और दो लोटे वह भी निश्चित ही है। उसमें कोई कम-ज़्यादा नहीं कर सकता इसलिए मन-वचन-काया से तू लक्ष्मी के लिए प्रयत्न करना, इच्छा नहीं करना। ये लक्ष्मी जी तो बैंक बेलेन्स हैं। वे यदि बैंक में जमा होंगी तभी मिलेंगी न? यदि कोई लक्ष्मी की इच्छा करता है तो लक्ष्मी जी कहती हैं, कि 'तुझे इस जुलाई में जो पैसे मिलने वाले थे वे अब अगली जुलाई में मिलेंगे।' और अगर कहें, कि 'मुझे पैसे नहीं चाहिए', तो वह भी बहुत बड़ा गुनाह है। लक्ष्मी जी का तिरस्कार भी नहीं करना चाहिए और इच्छा भी नहीं करनी चाहिए। उन्हें तो नमस्कार करना चाहिए। उनका तो विनय रखना चाहिए क्योंकि वे तो हेड ऑफिस में हैं। लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'जिस समय पर जिस मुहल्ले में (नियम से खुद को हाज़िर) रहना हो, उसी समय रहना चाहिए और हम समय-समय पर (पैसे) भेज ही देते हैं। तुम्हारे सभी ड्राफ्ट वगैरह सभी टाइम पर आ जाएँगे लेकिन मेरी इच्छा मत रखना क्योंकि नियम से जितना होता है उसे ब्याज सहित भेज देते हैं' जो इच्छा नहीं करता उसे समय पर भेज देते हैं, दूसरा लक्ष्मी जी क्या कहती हैं, कि 'यदि तुझे मोक्ष जाना हो तो जितनी हक़ की लक्ष्मी मिले वही लेना। किसी की भी लक्ष्मी छीनकर, ठगकर मत लेना।'

ऐसा क्यों मान बैठे हो?

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी नहीं होगी तो साधन नहीं होंगे और साधन के लिए लक्ष्मी की ज़रूरत है, अत: वह हम जो ज्ञान लेना चाहते हैं, वह लक्ष्मी

(रूपी) साधन के बिना कब मिलेगा? अत: यह लक्ष्मी ज्ञान की शाला में जाने का पहला साधन है, ऐसा नहीं लगता?

दादाश्री : नहीं, लक्ष्मी बिल्कुल भी साधन नहीं है। ज्ञान के लिए तो नहीं लेकिन वह किसी भी प्रकार से बिल्कुल भी साधन नहीं है। इस दुनिया में अगर कोई गैरज़रूरी चीज़ हो तो वह लक्ष्मी है। जो ज़रूरत महसूस होती है, वह तो भ्रांति और नासमझी से मान बैठे हैं। ज़रूरत किसकी है? सब से पहले हवा की ज़रूरत है। यदि हवा नहीं होगी तो तू कहेगा कि नहीं, हवा की ज़रूरत है क्योंकि हवा के बिना मर जाते हैं। लक्ष्मी के बगैर मरने वाले नहीं देखे गए। यानी यह लक्ष्मी ज़रूरी साधन है, ऐसा जो कहते हैं, वह तो सारी मेडनेस (पागलपन) है क्योंकि दो मिल वाले को भी लक्ष्मी चाहिए, एक मिल वाले को भी लक्ष्मी चाहिए, मिल के सेक्रेटरी को भी लक्ष्मी चाहिए, मिल के मज़दूर को भी लक्ष्मी चाहिए तो फिर सुखी कौन है? ये तो विधवा भी रोए और सुहागन भी रोए और सात पतियों वाली भी रोए। यह विधवा रोए तो हम समझ सकते हैं कि उस स्त्री का पति मर गया है लेकिन यह सुहागन, 'तू किसलिए रो रही है?' तब वह कहेगी, 'मेरा पति नालायक है' और सात पतियों वाली तो चेहरा ही नहीं दिखाती! ऐसी ये लक्ष्मी की बातें हैं। तो फिर क्यों इस लक्ष्मी के पीछे पड़े हो? ऐसे कहाँ फँसे आप?

ऐसे कब तक लालच में भटकते रहना है?

जैसे शक्करकंद भट्ठी में भुनता है न, वैसे पूरी ज़िंदगी ये मनुष्य भुन रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, घुटन में ही जी रहे हैं।

दादाश्री : नहीं जीएँ तो क्या करें? कहाँ जाएँ वे? यह जीना भी अनिवार्य है फिर और मरने की भी किसी के हाथ में सत्ता नहीं है। मरने जाएँगे, तब पता चलेगा। पुलिस वाला पकड़कर केस करेगा। जैसे जेल में गए हुए व्यक्ति को मजबूरन सबकुछ करना पड़ता है न, वैसे ही यह जीना भी अनिवार्य है, पैसा भी अनिवार्य है।

लक्ष्मी के लिए कहीं हाय-हाय की जाती होगी? और उसके लिए हाय-हाय करके कोई संतुष्ट हुआ है?

ऐसा जीवन किस काम का है फिर? लाइफ तो, लाइफ होनी चाहिए या नहीं? पूरा ब्रह्मांड विरोध करे तब भी आपको घबराहट नहीं हो, वैसा होना चाहिए या नहीं? तेरे पास (आत्म वैभव रूपी) सभी सामान है। जितना सामान मेरे पास है, उतना सभी सामान तेरे पास भी है लेकिन तुझे किसी ने वह दिखाया नहीं है इसलिए वह सारा माल भीतर वैसे ही आवरण में पड़ा हुआ है। मेरे जैसा कोई ज्ञानी मिले तब फिर से अनावृत कर देगा, 'ले, तू तेरा खा। मैं निमित्त हूँ।' यदि खुद का 'सामान' भोग रहा हो तो भी ठीक है, लेकिन यह तो परायों से आशा रखता है कि ये कुछ दें तो अच्छा। अरे, वह खुद ही लोगों से कुछ आशा रखता है, वह तुझे क्या देगा? और तूने ऐसा कोई नामवर देखा है कि जिससे आशा रखी जा सके? और बहुत माँगें, तब शर्म के मारे पाँच लाख देगा भी सही लेकिन तब भीतर मान की भीख रहती है, कीर्ति की भीख रहती है, नाम का लालच रहता है! संपूर्ण भीख जाने के बाद ही यह जगत् 'जैसा है वैसा' दिखाई देता है।

अटकण से लटके हैं संसार में

किसी को विषय की *अटकण* (जो बंधन रूप हो जाए) पड़ी होती है, किसी को मान की

अटकण पड़ी होती है, ऐसी तरह-तरह की *अटकण* पड़ी होती हैं। किसी को 'कहाँ से कमाऊँ', कहाँ से कमाऊँ' ऐसी *अटकण* पड़ी होती है। अर्थात् इस तरह से पैसे की *अटकण* पड़ी होती है। वह सुबह उठे, तभी से उसे पैसों का ही ध्यान रहा करता है। वह भी बड़ी *अटकण* कहलाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन पैसे के बगैर तो चलता नहीं है न!

दादाश्री : चलता नहीं है लेकिन पैसे किस से आते हैं लोग वह नहीं जानते और पीछे दौड़ते रहते हैं! पैसे तो पसीने की तरह आते हैं। जैसे किसी को पसीना ज़्यादा आता है और किसी को कम और जैसे पसीना आए बिना नहीं रहता वैसे ही पैसे भी आते ही हैं लोगों के पास!

कौन किसके पीछे?

लक्ष्मीजी कैसे आती हैं और कैसे जाती हैं वह हम जानते हैं। लक्ष्मी जी मेहनत से नहीं आतीं या अक्ल से या ट्रिक (युक्ति) करने से नहीं आतीं। लक्ष्मी किस आधार पर कमाते हैं? लक्ष्मी तो पुण्य की कमाई है। पागल भी पुण्य से कमाता रहता है।

लक्ष्मीजी तो पुण्यशाली के पीछे ही घूमती रहती हैं और मेहनती लोग लक्ष्मी जी के पीछे घूमते हैं। अर्थात् हमें देख लेना चाहिए कि पुण्य होगा तो लक्ष्मीजी पीछे आएँगी। वर्ना मेहनत से तो रोटी मिलेगी, खाने-पीने का मिलेगा और एकाध बेटी होगी तो उसकी शादी हो जाएगी। बाकी पुण्य के बगैर लक्ष्मी नहीं मिलती।

अर्थात् सच्ची हकीकत क्या है कि यदि तू पुण्यशाली है तो क्यों हाथ-पैर मारता है? और अगर तू पुण्यशाली नहीं है तब भी क्यों हाथ-पैर मार रहा है?

पुण्यशाली तो कैसा होता है? जब कलेक्टर ऑफिस से चिढ़कर घर वापस आते हैं न, तब मेम साहब क्या कहती हैं, 'डेढ़ घंटे लेट हो गए, कहाँ गए थे?' यह देखो पुण्यशाली (!) क्या पुण्यशाली के साथ ऐसा होता होगा? पुण्यशाली को तो हवा का एक उल्टा झोंका तक नहीं लगता। बचपन से ही वह क्वालिटी अलग होती है। अपमान का संयोग ही नहीं मिलता। जहाँ जाते हैं वहाँ 'आओ, आओ भाई' इस तरह से उनका लालन-पालन होता है जबकि ये तो जहाँ-तहाँ टक्कर ही खाता रहता है। फिर उसका अर्थ ही क्या है? फिर जब पुण्य खत्म हो जाता है न तब जैसे थे वैसे ही हो जाते हैं! अर्थात् अगर तू पुण्यशाली नहीं है तो पूरी रात मेहनत करेगा तो भी सुबह तक क्या पचास मिल जाएँगे? इसलिए हाथ-पैर मत मार और जो मिला है, उसी में खा-पीकर सो जा न चुपचाप।

पैसे की प्राप्ति में पुरुषार्थ कहाँ?

प्रश्नकर्ता : यह पुण्य की लक्ष्मी हमारे पास आने वाली है या नहीं, उसके लिए कुछ तो सहज पुरुषार्थ होना ही चाहिए न?

दादाश्री : पुण्य की लक्ष्मी के लिए कैसा पुरुषार्थ होता है? यों सरल और सुंदर पुरुषार्थ होता है। यह तो सरल और सुंदर हो, उसे भी हम नासमझी से कठिन बना देते हैं। धीरज रखेंगे तो सब अपने आप सरल ही निकलता है! यह तो धीरज नहीं रहती और भाग-दौड़ कर लेता है और सब बिगाड़ देता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा है, व्यापार में अपने सिर पर स्वाभाविक रूप से कुछ तलवारें लटकी होती हैं जैसे कि इन्कम टैक्स भरना है, सेल टैक्स भरना है, पगार (तनख्वाह) बढ़ानी है तो ऐसे दबाव की वजह से वह बेकार कोशिश करता रहता है कि ऐसा कर लूँ और वैसा कर लूँ!

दादाश्री : फिर भी कुछ (बदलाव) नहीं होता, बेकार में कोशिश करने वाले को तो भाग-दौड ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् जैसा आपने कहा है वैसे यदि धीरज रखेंगे तो अपने आप ही सब सेट हो जाएगा?

दादाश्री : धीरज से ही सब होता है। शांति से सब मिलता है। वह घर बैठे ही बुलाने आता है। फिर ऐसा नहीं है कि हमें बाज़ार में जाकर खोजना पड़े। वर्ना मेहनत करके मर जाए, बुद्धि का उपयोग करके मर जाए तब भी आज चार आने भी नहीं मिलते और ऐसा कहाँ पकड़ बैठा है? पूरी दुनिया ही लक्ष्मी के पीछे पड़ी हैं!

नीति-प्रमाणिकता लाती है प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी की कमी किस कारण से रहती है?

दादाश्री : चोरी करने से। जहाँ मन-वचन-काया से चोरी नहीं होती, वहाँ लक्ष्मी जी कृपा करती हैं। चोरी करने से लक्ष्मी का अंतराय आता है। ट्रिक और लक्ष्मी जी का बैर है। स्थूल चोरी बंद होने पर उच्च जाति में जन्म होता है लेकिन सूक्ष्म में चोरी अर्थात् ट्रिक करना, वह तो हार्ड रौद्र ध्यान है। ट्रिक तो होनी ही नहीं चाहिए। ट्रिक करना किसे कहेंगे? 'यह माल बहुत अच्छा है' ऐसा कहकर मिलावट वाला माल देकर खुश होते हैं।

यदि आप को व्यापार करना हो तो निर्भयता से करते रहना, कोई भय मत रखना और व्यापार ईमानदारी से करना। जितना हो सके उतना, पॉसिबल (संभव) हो उतना न्याय करना। नीति की कक्षा में रह कर जितना पॉसिबल हो उतना करना, जो इम्पॉसिबल हो वह मत करना।

प्रश्नकर्ता : नीति की कक्षा किसे कहेंगे?

दादाश्री : नीति की कक्षा, वह आपको समझाता हूँ। यहाँ मुंबई में एक व्यापारी थे, जब गेहूँ के भाव बहुत बढ़ गए थे न, तब वे व्यापारी एक वैगन इंदौरी गेहूँ मँगवाते और एक वैगन रेत मँगाते, फिर दोनों को मिलाकर वापस बोरी में भर देते। बोलो, अब क्या इसे नीति कहेंगे?

प्रश्नकर्ता : लेकिन नीति-अनीति में तो बहुत सूक्ष्म अंतर होता है, वह पता नहीं चलता।

दादाश्री : जो चीज़ें मनुष्य के खाने की हैं, मनुष्य के शरीर में जो चीज़ें जाती है जैसे कि खाना या दवाइयाँ उनके लिए तो हमें बहुत ही नियम रखने चाहिए। ऐसा है न कि आप धोखे से चालीस रतल(पाउन्ड) के बदले सड़तीस रतल दो, लेकिन यदि प्योर दो तो आप कम गुनहगार हो और जो व्यक्ति मिलावट करके पूरे चालीस पाउन्ड पूरा देता है वह बहुत ही गुनहगार है। मिलावट मत करो। मिलावट वाला देना गुनाह है। मानव जाति के लिए मिलावट नहीं होनी चाहिए।

जो लोग बिना हक़ का लूट लेते हैं, बिना हक़ का भोग लेते हैं, वे सभी यहाँ से, दो पैर में से चार पैर में जाते हैं और ऊपर से एक पूँछ भी मिलती है। साथ में ईमानदारी होनी ही चाहिए। ईमानदारी से मनुष्य वापस मनुष्य में आ सकता है।

अनीति-बेईमानी का परिणाम क्या?

ऐसा है न, खुद के लिए हित-अहित के क्या साधन करने चाहिए, वह जीव ने कभी सुना ही नहीं है। खुद का हित किसमें है और अहित किसमें है, उसका होश ही नहीं रहा। लोगों को देखकर खुद अपने हित-अहित के साधन अपनाता रहा है। लोग पैसे के पीछे पड़ते हैं। 'पैसे लाऊँगा तो सुखी हो जाऊँगा,' लेकिन

उसका कुछ भी हित नहीं होता। 'बाय, बोरो ओर स्टील (खरीदो, उधार लाओ अथवा चोरी करो) उस तरीके से पैसे लाए तो नहीं चलेगा। किसी भी तरह पैसे लाए वे क्या वह चलेगा? कोई नीति तो होनी ही चाहिए न? नीतिमय पैसे लाओ तो उसमें हर्ज नहीं है। यदि अनीतिपूर्वक पैसे लाए तो खुद के ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी और जब अर्थी निकलेगी उस समय पैसे यहीं पर पड़े रहेंगे। वे कुदरत की ज़ब्ती में चले जाएँगे और खुद ने वहाँ पर वे जो उलझनें पैदा कीं, वह फिर बाद में भुगतना पड़ेगा।

सही रास्ते से जाना, उससे भीतर शांति रहेगी। भले ही बाहर पैसे नहीं हों लेकिन अंदर शांति और आनंद रहेगा। गलत रास्ते से आया हुआ पैसा टिकता भी नहीं और अंदर दुःखी कर देता है इसलिए गलत रास्ते से जाना ही नहीं है, ऐसा निश्चित करना और सभी को सुख दोगे तो सुख मिलेगा, दुःख दोगे तो दुःख मिलने की शुरुआत हो जाएगी।

निर्मल लक्ष्मी से क्लेश बंद

प्रश्नकर्ता : कितनों के घरों में लक्ष्मी इसी प्रकार की होगी इसीलिए क्लेश होता होगा क्या?

दादाश्री : अनीति की लक्ष्मी के कारण ही ऐसा होता है। यदि लक्ष्मी निर्मल होती है तो हमेशा सब अच्छा रहता है, मन अच्छा रहता है। अशुभ लक्ष्मी घुस गई है, उससे क्लेश होते हैं। हम ने बचपन में ही तय किया था कि जहाँ तक हो सके गलत तरीके की लक्ष्मी घुसने ही नहीं देनी है। तो आज (हमें) छियासठ साल हुए लेकिन गलत लक्ष्मी घुसने नहीं दी इसीलिए तो घर में कभी भी क्लेश हुआ ही नहीं। घर में तय किया कि इतने पैसे से घर चलाना है। भले ही व्यापार में लाख रुपए कमाए हों लेकिन ये 'पटेल' अगर सर्विस करने जाएँ तो कितना वेतन मिलेगा? बहुत हुआ तो छः सौ-सात सौ रुपए मिलेंगे। व्यापार तो पुण्य का खेल है इसलिए नौकरी में जितने मिले उतने ही पैसे से घर चलाना, बाकी को तो व्यापार में ही रहने देना चाहिए। इन्कम टैक्स वाले की चिट्ठी आए, तब हमें कहना 'वह जो रकम थी उसे भर दो।' कब कौन सा अटैक आ जाएगा उसका कोई ठिकाना नहीं है और यदि वे पैसों खर्च कर दिए तो जब 'इन्कम टैक्स वाले का अटैक' आएगा तब अपने भीतर वह दूसरा (हार्ट) 'अटैक' आ जाएगा। सभी जगह अटैक घुस गए हैं न? इसे जीवन ही कैसे कहेंगे? आपको क्या लगता है? गलती है या नहीं? तो हमें वह गलती खत्म करनी है।

'ज्ञानी' आउट ऑफ बाउन्ड्री में

हमें तो, सब है फिर भी भोगना नहीं है। हमारे पास होने के बावजूद भी हमें विचार ही नहीं आते और लोगों के पास नहीं है इसलिए उन्हें विचार नहीं आते।

जब तक कोई रिश्वत देने नहीं आता, तब तक रिश्वत का विचार ही नहीं आता। तब तक वैसा एविडेन्स ही नहीं मिला और ऐसे सख्त लोग भी हैं, जिन्हें कोई देने आए फिर भी वे न लें लेकिन वे अपनी बाउन्ड्री में प्योर कहलाते हैं। मनुष्य आउट ऑफ बाउन्ड्री नहीं रह सकता। वह तो ज्ञानीपुरुष का ही काम है। जो देह से पर हो चुके हों, देहातीत हो चुके हों, अन्य किसी का काम नहीं है।

लेने वाला खुद ही होता है कंगाल

क्या ये सब लोग सुखी है? मूलतः तो लोग दुःखी हैं और उन्हीं से रुपए लेते हो? दुःख दूर करने के लिए तो गुरु के पास जाते हैं जबकि आप तो उनके रुपए लेकर उनका दुःख बढ़ा देते

हो! किसी से एक पाई भी नहीं लेनी चाहिए। किसी से कुछ भी लेना, वह जुदाई कहलाती है और उसी को संसार कहते हैं। उसी से वह भटक गया है। जो लेने वाला व्यक्ति है वह भटका हुआ कहलाता है। उसे पराया समझता है इसलिए उससे पैसे ले लेता है।

इस दुनिया की कोई भी चीज़, यदि एक रुपए का भी मैं उपयोग करूँ तो उतना ही मैं कंगाल हो जाऊँगा। भक्तों की एक पाई का भी उपयोग नहीं करना चाहिए। जिन्होंने यह व्यापार शुरू किया है, वे खुद कंगाली की स्टेज में चले जाएँगे। उन्हें जो कुछ भी सिद्धि प्राप्त है, उसे खो कर चले जाएँगे। जो थोड़ी-बहुत सिद्धि प्राप्त हुई थी, उसके आधार पर सभी लोग इकट्ठे होते थे। लेकिन फिर वह सिद्धि खत्म हो जाती है। किसी भी सिद्धि का दुरुपयोग किया तो वह सिद्धि खत्म हो जाती है।

अनंत जन्मों से यही किया है न! और इसीलिए उनके मन में ऐसा फिट हो गया है कि लोभ से ही मुझे शांति रहती है और सुख मिलता है। अब वह लोभ ही कभी मार खिलाता है। आत्मा होने के बाद फिर लोभ छूटता जाता है। अभी तक तो लोभ ही आखिरी स्टेशन था, अब आखिरी स्टेशन आत्मा का आया है तो अपने आप ही प्रवृत्ति बदलती जाएगी!

अत: प्योरिटी होनी चाहिए। यदि हमें कोई पूरे संसार की चीज़ें दे तो हमें उनकी ज़रूरत नहीं, इस संसार का पूरा सोना हमें दे तो भी हमें उसकी ज़रूरत नहीं। पूरे संसार के रुपए दे तो भी हमें नहीं चाहिए। स्त्री से संबंधित विचार ही नहीं आते। अर्थात् इस जगत् में किसी भी प्रकार की भीख हमें नहीं है। आत्म दशा को साधना, वह क्या कोई सरल बात है?

यथार्थ समर्पण से होते हैं आत्मरूप

आप मुझ से जो प्राप्त करना चाहते हो, वह कब प्राप्त कर सकते हो? मेरे नज़दीक कब आ सकते हो? जब आपकी सब से प्रिय चीज़ मुझे अर्पण कर दोगे तब। संसार में, व्यवहार में जो प्रिय चीज़ है, वह मुझे अर्पण कर दोगे, तब आप मेरे नज़दीक आ सकते हो। आपने तो ये मन, वचन, काया मुझे अर्पण किए हैं लेकिन अभी भी एक चीज़ बाकी रह गई, लक्ष्मी! यदि उसे आप अर्पण कर दो तो मेरे नज़दीक आ सकते हो। अब मुझे तो उसकी ज़रूरत नहीं है। फिर हमें कैसे अर्पण करोगे? ऐसा कोई रास्ता निकलेगा तो अर्पण कर सकते हो! उस समय जब पिछले साल आपने (ज्ञानदान में) लक्ष्मी दी तभी से आपको ज़्यादा लगाव हो गया, ऐसा लगता है क्या आपको?

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा।

दादाश्री : यही इसकी (चिपकाने की) कला है, वर्ना चिपकेगा ही नहीं। अलग का अलग ही रहा करेगा। अब अपने यहाँ तो पैसे लेने के लिए कुछ था ही नहीं न! हम तो लेते ही नहीं थे न! तब तक मन अलग ही रहा करता। पैसे (दान में देने) की बात आए तो वहाँ चिपक जाता है मन, वर्ना मन वहाँ से उखड़ जाता है। ज्ञानीपुरुष पर लोगों की प्रीति होती है, अर्थात् ज्ञानीपुरुष कहेंगे कि तू ऐसे बाहर (सत्कार्य में) डाल दें! लक्ष्मी पर से प्रेम घटा तो आत्मा हो गया।

जैसी हम ने बातचीत की है, अगर अब उसके अनुसार आप सब सेट कर लोगे तो सारा (लोभ) निकल जाएगा। दादा के आधार पर किया इसलिए सब आधार टूट गए। वहीं पर आत्मा चिपका हुआ था, वे सभी (संसार के) आधार टूट गए और (इसलिए) उसके संसार के भय छूट

गए। तब फिर आत्मा में रहता है। आत्मा यदि आत्मा में आ गया न तो बस छूट गया!

ज्ञानी की खटपट तोड़ती है, लोभ की गाँठ

ऐसा है, आपका हृदय खोलना पड़ेगा। फिर रुपए दबाकर रखें और मोक्ष चाहिए! श्रीमद् राजचंद्र जी ने पुस्तक में लिखा है कि ज्ञानीपुरुष की तन-मन और धन से सेवा करो। तब एक व्यक्ति ने पूछा कि, 'साहब, ज्ञानीपुरुष को भला धन का क्या करना है?' तब कहा, 'वे धन को नहीं छूते।' मैं तो ये कपड़े अपने घर के, मेरे खुद के व्यापार में से पहनता हूँ। मैंने एक भी पाई नहीं ली है और न ही मेरे साथ जो सेवा करते हैं, उन्होंने ली है। तब वे पूछते हैं, 'धन किसलिए?' तब उन्होंने बताया, 'जब तक धन की गाँठ है, जब तक उसकी वह लोभ की गाँठ नहीं टूटती, तब तक मुक्ति नहीं होगी, अतः लोभ की गाँठ तुड़वाने के लिए वे कहते हैं कि 'इस जगह पर इतना खर्च करना।' जिसके पास हों, उसे कहते हैं। जिसके पास नहीं है उसे तो नहीं कहते न! जिसके पास हो, उसे कहते हैं कि तुम इस जगह पर खर्च करना।

भगवान के काम में लक्ष्मी दो

आप सभी पैसे व्यापार में डाल देते हो, जबकि मैं कहता हूँ कि पैसे (सत्कार्य) में डाल दो यहाँ पर और मैं तो पैसों को छूता नहीं। पैसा संपूर्ण सत्य नहीं है, वह सापेक्ष सत्य है। यदि मुझे सोना दो तो वह मेरे काम का है ही नहीं। मुंबई में सभी बहनों ने पैर के बिछुए निकाल कर दे दिए तो मैंने कहा कि 'मेरे काम के नहीं हैं। आपको यदि मोह है तो रहने देना। मुझे आपका कुछ नहीं चाहिए।' तब कहने लगीं, 'हम ने इतना भाव किया है, इसलिए दे देने हैं।' तब मैंने कहा कि, 'आपकी मरज़ी की बात है।' 'सीमंधर स्वामी भगवान के मुकुट के लिए उन्होंने भाव किया है।' तब मैंने कहा, 'दे दो आप।' वर्ना, हमें तो कुछ चाहिए ही नहीं।

जिसे कुछ भी नहीं चाहिए, जिसे कोई वाँछना नहीं है, किसी चीज़ के भिखारी नहीं हैं, तो वहाँ आपका काम निकाल लो।

ज्ञानी को नहीं स्पृहा किसी चीज़ की

मनुष्य को पैसे इकट्ठे करने की इच्छा क्यों होती है? उसे जब कहीं भी चैन नहीं पड़ता तब वह किसी भी तरफ झुक जाता है। पैसों के चक्कर में पड़ा रहता है या फिर विषयों की तरफ झुक जाता है। यदि ऐसा आनंद रहे न, तब तो तृप्ति ही रहेगी उसे। फिर उसे क्रोध-मान-माया-लोभ रहते ही नहीं। यह तो, आनंद नहीं होने के कारण ही बेचारे लक्ष्मी के तरफ झुक गए हैं! स्वरूप का 'ज्ञान' हो जाने के बाद ही लोभ जाता है।

जहाँ किसी भी प्रकार की ज़रूरत नहीं हो, पैसों की ज़रूरत नहीं हो, खुद के आश्रम का विस्तार करने की या खुद का नाम कमाने की ज़रूरत नहीं हो, वैसे लोग हों तो बात अलग है। वैसे लोग एक्सेप्टेड (स्वीकार्य) हैं। उस दुकान को यदि 'दुकान' कहें तो भी वहाँ लोगों को लाभ होगा फिर यदि वहाँ पर ज्ञान नहीं हो तो भी उसमें हर्ज नहीं है लेकनि वे व्यक्ति निर्मल होने चाहिए, प्योर होने चाहिए। इम्प्योरिटी (मलिनता) से, कभी कोई कुछ प्राप्त नहीं कर सकता।

मैं इस दुनिया के दुःख लेने आया हूँ। आपके सुख अपने पास ही रहने दो। उसमें आपको हर्ज है क्या? आपके जैसे यहाँ पर पैसे दें तो भी मुझे पैसों का क्या करना है? आपके पैसे आप अपने पास ही रहने दो, वे आपके काम

आएँगे। जहाँ ज्ञानी होते हैं, वहाँ पैसों का लेन-देन नहीं होता। ज्ञानी तो बल्कि आपके सभी दु:ख निकालने के लिए आते हैं, दु:ख उत्पन्न करने के लिए नहीं आते!

मैं लक्ष्मी लूँ तो लोग भी भिखारी और मैं भी भिखारी, तो फिर 'ज्ञानीपुरुष' और लोगों में फर्क क्या रहा? धर्म में लक्ष्मी या विषय नहीं घुसने चाहिए। जहाँ धर्म में लक्ष्मी हो वहाँ पर चारित्र हो ही नहीं सकता।

व्यवहार चारित्र कैसा होना चाहिए ?

प्रश्नकर्ता : जहाँ लक्ष्मी हो वहाँ चारित्र नहीं होता वह कैसे?

दादाश्री : वह चारित्र कहलाएगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसमें सद्व्यवहार भी रहता है न?

दादाश्री : नहीं। सद् (सद्व्यवहार) करते हैं, तभी से दुर्व्यवहार शुरू हो जाता है। सद् भी नहीं और असद् भी नहीं, ऐसा व्यवहार ही नहीं करना है। हमारा बीस, पच्चीस सालों से पैसों का कोई व्यवहार ही नहीं है। फिर झंझट ही नहीं न! मेरे जेब में कभी भी चार आने तक नहीं होते। हमारा सारा व्यवहार ये नीरू बहन ही करते हैं!

व्यवहार चारित्र अर्थात् इस व्यवहार में किसी को दु:ख न हो, ऐसा वर्तन रहता है। दु:ख देने वाले को भी दु:ख न हो, वैसा वर्तन, वह व्यवहार, चारित्र। व्यवहार चारित्र में दो मुख्य चीज़ें कौन सी हैं? विषय बंद हो जाना चाहिए। कैसा विषय? स्त्री विषय और दूसरा लक्ष्मी बंद।

मोक्ष मार्ग में तीन आवश्यक चीज़ें

मोक्ष मार्ग में दो चीज़ें नहीं होनी चाहिए। स्त्री से संबंधित विचार और लक्ष्मी के विचार! जहाँ स्त्री का विचार भी है और लक्ष्मी का विचार भी है, वहाँ धर्म नहीं है। इन दो मायाओं से ही तो यह जगत् कायम है। हाँ, इसलिए वहाँ पर धर्म खोजना भूल है। तो अभी लक्ष्मी के बगैर कितने केन्द्र चलते हैं?

प्रश्नकर्ता : एक भी नहीं।

दादाश्री : वह माया छूटती ही नहीं न! गुरु में भी माया घुस चुकी होती है। कलियुग है न इसलिए घुस जाती है न, थोड़ी बहुत? अत: जहाँ पर स्त्री से सबंधित विचार हैं, जहाँ पर पैसे से संबंधित लेन-देन है, वहाँ पर सच्चा धर्म हो ही नहीं सकता। संसारियों के लिए नहीं लेकिन जो उपदेशक होते हैं न, जिनके उपदेश के आधार पर चलते हैं, वहाँ ऐसा नहीं होना चाहिए। वर्ना इन संसारियों के वहाँ भी वही और आपके वहाँ भी वही? ऐसा नहीं होना चाहिए।

और तीसरा कौन सा? सम्यक् दृष्टि होनी चाहिए।

अत: जहाँ लक्ष्मी और स्त्री संबंध हो, वहाँ पर खड़े नहीं रहना चाहिए। गुरु, देखकर बनाने चाहिए (इस बारे में)। लीकेज वाले हों तो नहीं बनाना। (उनमें) बिल्कुल भी लीकेज नहीं होनी चाहिए। भले गाड़ी में घूमते हों तो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन चारित्र में फेल हो तो उसमें हर्ज है। बाकी, यदि अहंकार (मान) हो उसमें हर्ज नहीं है कि 'बाप जी बाप जी' करने से तो खुश हो जाएँ उसमें भी हर्ज नहीं है। चारित्र में फेल नहीं हो तो लेट गो कर देना चाहिए। सब से मुख्य चीज़ है 'चारित्र'।

विषय ही अजागृति

प्रश्नकर्ता : इस मनुष्य जाति में ब्रह्मचर्य

रह ही नहीं सकता, इसका क्या कारण है? मोह है? राग है?

दादाश्री : यह बुद्धिपूर्वक नहीं है सुख। बिना सोचे-समझे माना गया सुख है। लोगों ने जो माना, वही हम ने भी मान लिया। वह सिर्फ मान्यता का ही सुख है और 'जलेबी सुखदाई है,' वह बुद्धिपूर्वक का सुख है।

निर्मल बुद्धि वाले को विषय का पृथ्थकरण करने को कहें तो ऐसा कहेगा, 'विषय थूकने जैसी चीज़ भी नहीं है।' लेकिन जिसकी बुद्धि में मल जम गया हो, उसे तो सबकुछ उल्टा ही दिखेगा।

विषय के बारे में यदि कोई सोचे न, यदि सोचना आए तो वह विषय की ओर कभी जाएगा ही नहीं लेकिन सोचना भी नहीं आता न? विषय, वह अजागृति है। विषय पुसाए ही कैसे? जो चीज़ें सोचने पर अच्छी नहीं लगें, उसी चीज़ से संबंध कैसे पुसाए?

इस ज़हर को ज़हर नहीं समझा

विषय को ज़हर समझा ही नहीं। ज़हर समझे तो उसे छूएगा ही नहीं न! इसलिए भगवान ने कहा है कि ज्ञान का फल है विरति! समझने का फल क्या? कि रुक जाए। विषयों के जोखिम को समझा ही नहीं, इसलिए वैसा करने से रुका नहीं।

यदि कोई भय रखने जैसा हो तो वह इस विषय का भय रखने जैसा है। इस जगत् में अन्य कोई भय रखने जैसी जगह है ही नहीं। इसलिए सावधान हो जाओ। इन साँप, बिच्छू और बाघ से सावधान नहीं रहते? सावधान रहते हैं न? जब बाघ की बात आए, तब हमें उससे भय नहीं रखना हो, फिर भी उससे भय लगता है न? उसी तरह जब विषय की बात आए तो, भय लगना चाहिए। जहाँ पर भय लगे, वहाँ पर क्या मज़े से खाना खाते हैं? नहीं। अत: जहाँ पर भय हो, वहाँ मज़ा नहीं होता। जगत् के लोग इस विषय को भयसहित भोगते होंगे? नहीं। लोग तो यह मज़े से भोगते हैं।

भीखों में भटका जन्म

प्रश्नकर्ता : पुरुषों को विषय की भीख होती है, वैसे ही स्त्रियों को भी विषय की भीख होती है न?

दादाश्री : हाँ, (स्त्री को जीतना) इतना यदि पुरुषों को आ जाए न, तो पुरुष जगत् जीत जाएगा! अगर नहीं जीतेगा तो पुरुष यूज़लेस (कुछ काम का नहीं ऐसा) हो जाएगा। पुरुष, पुरुष कब तक कहलाएगा? स्त्री उससे विषय की भीख माँगे, तब तक! स्त्री अधिक विषयी है, फिर भी पुरुष मूरख बन जाता है यह भी आश्चर्य है न!

क्षत्रिय पुत्र कौन? कि ऐसे विषय की भीख माँगने का अवसर आने से पहले तो बिल्कुल बंद ही कर दे। (विषय) करे ही नहीं कभी भी, परमेनन्ट बंद। स्टॉप फॉर एवर (सदा के लिए बंद)।

आत्मा जानते ही, खत्म वासना रस

प्रश्नकर्ता : मनुष्य की वासनाएँ कब खत्म होंगी?

दादाश्री : वासनाएँ तो हो ही जाएँगी। वासनाएँ तो आप ने खड़ी की हैं, आप ही उसके जन्म दाता हो और विलय करने वाले भी आप ही हो।

वस्तु को वासना नहीं कहते, रस को वासना कहते हैं। यदि रस नहीं होगा तो वह वासना मानी ही नहीं जाएगी। यानी कि वासना कहाँ से कहाँ गायब हो जाती है। अब वह भी एक ही घंटे के

प्रयोग से, ज़्यादा प्रयोग नहीं, इस ज्ञान के बाद वासना चली जाती है न! रस चला जाता है न!

जब तक पुरुष हैं, तब तक यह वासना रहेगी और स्त्रियाँ हैं, तब तक वासना रहेगी लेकिन अगर पुरुष ही खत्म हो जाए तो?

प्रश्नकर्ता : उसे (खुद) कैसे मिटा सकते हैं?

दादाश्री : जो वासना वाला है, वह चंद्रेश है और आप तो 'माइ नेम इज़ चंद्रेश' कहते हो। इसलिए आप अलग हो इससे। इस बात पर भरोसा है? तो 'वह' आप कौन हो? इतना ही आपको मैं रियलाइज़ करवा देता हूँ तो आपकी वासना छूट जाएगी। अब ये वासनाएँ क्या हैं? 'मैं चंद्रेश हूँ' जब यह मिटेगा तभी वासनाएँ जाएँगी वर्ना वासनाएँ नहीं जाएँगी। मैं तो क्या कहता हूँ कि 'आत्मा क्या है' वह जानो, 'अनात्मा क्या है' वह जानो। इतना जानते ही वासनाएँ गायब हो जाएँगी।

दादा की सख्ती के पीछे प्योरिटी

इस संसार में यदि कुछ करने जैसा नहीं है तो वह यह कि किसी स्त्री की पवित्रता नहीं लूटना। ये लोग तो बेचारे अपने आपको भद्र मानते हैं वे, 'बहन, बहन' कहकर स्त्री की पवित्रता (आबरू) लूट लें। ऐसे लोग! ये लोग तो 'बहन' कहकर छल-कपट करते हैं। इस काल के जो लोग हैं न, वे तो खुद अपने आपको भी दगा देते हैं।

अपने यहाँ इस सत्संग में ऐसे छल-कपट का विचार आए तो मैं कहूँगा कि यह 'मीनिंगलेस' (अर्थहीन-निरर्थक) बात है। यहाँ ऐसा व्यवहार किंचित्मात्र भी नहीं चलेगा। यदि कभी मेरी जानकारी में आया कि ऐसा व्यवहार चल रहा है, तो मैं जला दूँगा, भयंकर रूप से जला दूँगा। इस जगह पर किंचित्मात्र भी ऐसा नहीं चलेगा, यह संघ ऐसा नहीं होना चाहिए, यहाँ पर ऐसी भूल नहीं कर सकते।

हम ने तो कई ऐसे लोग देखे हैं कि बहनोई होने के बावजूद भी सगी बहन से जुड़ा हुआ होता है। फिर वह प्रतिदिन बहनोई के वहाँ जाता है। अरे! बहनोई के वहीं पर मुकाम करता है। ऐसे तो मैंने कई केस देखे हैं। मैं उनसे कहता भी हूँ कि, 'अरे! यह क्या व्यापार लगाया है? कौन से जन्म में छूटेगा तू? यदि फिर से ऐसा नहीं करे तो मेरे पास आ जाना, मैं तुझे चोखा कर दूँगा।' इस वर्ल्ड में भले ही कैसे भी गुनाह किए हों, चाहे कैसे भी गुनाह लेकर आए लेकिन यदि ज़िंदगी में फिर से ऐसे गुनाह नहीं करे तो हर तरह से मैं उसे चोखा बना दूँ। इन लोगों ने कैसे भयंकर गुनाह किए हैं 'बहन, बहन' करके (उसके साथ) शादियाँ की हैं लेकिन ऐसे लोगों के लिए सातवीं नर्क नहीं है। बहुत हुआ तो पहली, दूसरी, तीसरी या चौथी नर्क में जाएँगे।

विषय में संयोग हुआ तो हमारी नज़र कड़वी हो जाती है, हमें तुरंत सबकुछ पता चल जाता है? 'दादा' की नज़र कड़वी रहती है, वह सिर्फ विषय के बारे में ही, बाकी चीज़ों में नहीं। बाकी चीज़ों में कड़वी नज़र नहीं रखते। दूसरी गलतियाँ हो सकती हैं, लेकिन 'यह' तो होनी ही नहीं चाहिए, अगर हो जाए तो हमें बता देना। रिपेयर कर देंगे, छुड़वा देंगे।

निश्चय ही पहुँचाएगा अपने गाँव

प्रश्नकर्ता : विषय से मुक्त हुआ कब कहलाएगा?

दादाश्री : उसे फिर विषय का एक भी विचार नहीं आए। विषय से संबंधित कोई भी

विचार नहीं, (उस तरफ) दृष्टि नहीं, वह लाइन ही नहीं। जैसे वह जानता ही नहीं हो, ऐसे रहता है, वह ब्रह्मचर्य कहलाएगा।

जिसने कभी माँसाहार किया ही नहीं हो तो उसे माँसाहार के विचार ही नहीं आते, उस ओर दृष्टि ही नहीं होती और उस ओर का कुछ भी नहीं होता। वैसा रहता है।

प्रश्नकर्ता : हमारी वह दशा कब आएगी?

दादाश्री : कब आएगी, वह नहीं देखना है! चलते रहो न तो अपने आप गाँव आ जाएगा। चलते रहने से गाँव आता है, बैठे रहने से नहीं आता। रास्ता ज्ञानीपुरुष ने बता दिया है और वह रास्ता तूने पकड़ लिया है। अब, कब आएगा ऐसा कहने से थकान लगेगी इसलिए बस चलते ही रहो न! तो अपने आप आ जाएगा।

व्यवहार में सावधान करते हैं महात्माओं को

प्रश्नकर्ता : दादा, हम सत्संग के लिए गाँव-गाँव जाते हैं, वहाँ पर जेन्टस के बजाय लेडीज़ ज़्यादा होती है। सत्तर प्रतिशत तो लेडीज़ ही होती हैं जबकि पुरुष तीस प्रतिशत ही होते हैं इसलिए ब्रह्मचर्य के बारे में बहुत ही जागृत रहना पड़ता है। उन लोगों के बहुत रिस्पोन्स मिलते हैं। जैसे कि यदि कोई भाई सुंदर पद गाए तो वे लोग खुश हो जाते हैं।

दादाश्री : ऐसा तो, स्थूल अब्रह्मचर्य तो नहीं होता न! वह झंझट तो सूक्ष्म में है। यहाँ पर तो शहरों में तो रास्ते में मिलते हैं। गाँव में तो उतना ज़्यादा रुचि का कोई कारण ही नहीं होता न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन गाँठें फूटती हैं कभी-कभी।

दादाश्री : उन्हें तो तोड़ दो। शूट ऑन साइट ही होना चाहिए। जितना धुलेगा उतना कम। अनंत जन्मों से यही स्पंदन, वे पूर्व के संस्कार हैं। उसका भान ही नहीं है न! फोटो कैसी आती है उसका भान ही नहीं है न! फोटो अच्छी आती है, नहीं। बेकार ही होती है, गंदगी ही लगती है। बल्कि जलन होती है, फल नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : फल नहीं देता।

दादाश्री : यह तो हार्टिली होना चाहिए। अगर दो ही वाक्य हों न, बहुत हो गया, प्योर। प्योरिटी ऑफ माइन्ड, प्योरिटी ऑफ बुद्धि, चित्त की प्योरिटी होती रहती है न, चित्त की संपूर्ण प्योरिटी हो जाए तो वह पूर्ण हो जाएगा।

हमारी आज्ञा का पालन करना, इससे चित्त ठिकाने पर रहेगा। एक बार ज्ञान को ठीक से समझ लेना चाहिए।

अहंकार करके भी, विषय से छूट सकते हैं

'अतिपरिचयात् अवज्ञा'। इन पाँच विषयों का अनादि काल से अवगाढ़ परिचय होने के बावजूद भी उनकी अवज्ञा नहीं होती, वह भी आश्चर्य है न! क्योंकि एक-एक विषय के अनंत पर्याय हैं! उनमें से जिसके जितने पर्यायों का अनुभव हुआ, उतने पर्यायों की अवज्ञा होकर वे छूट जाते हैं! पर्याय अनंत होने के कारण अनंत काल तक भटकना पड़ेगा और पर्याय अनंत होने के कारण अंत भी नहीं आएगा! यह तो, ज्ञान के बिना इसमें से छूट ही नहीं सकते।

अपना मार्ग हर तरह से साहजिक है, लेकिन (विषय) के बारे में साहजिक नहीं है। इस विषय को तो इगोइज़म करके भी उड़ा देना है क्योंकि यह चरम शरीरी नहीं है! इसलिए अहंकार करके भी आज्ञा में रहना। (अणहक्क के विषय में नहीं

पड़ना) अहंकार का कर्म भले ही बंधे, लेकिन अक्रम विज्ञान में इतना सँभालने जैसा है!

विषय में प्योर होने के लिए करो पुरुषार्थ

ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, इस चार आधारों की आवश्यकता है। आपको जो ज्ञान मिला है, जो दर्शन-प्रतीति हुई है। उस प्रतीति से हुआ सब अनुभव में आए, उसी को ज्ञान कहते हैं। अर्थात् चारित्र फल मिलेगा। बीच में कौन रोकता है? वह है 'तप'।

यह तप की ही बात निकली न आज। यह तप पकड़ लो एक बार। तप का पुरुषार्थ करो। तप किए बगैर मोक्ष में कैसे जा पाएँगे।

मतलब उसमें प्योर रहना है। प्योर होना है, इम्प्योरिटी नहीं रहनी चाहिए। कचरा सब निकल जाए न! दादा के पास तो सब निकल जाता है। दादा सभी को भगवान बनाते हैं। आपने वह बदलाव नहीं देखा!

जिसकी सभी प्रकार की भीखें चली गई, उसके हाथ में इस जगत् के सभी सूत्र (सत्ता) दिए जाते हैं लेकिन भीख जाए तब न! कितने प्रकार की भीख? लक्ष्मी की भीख, कीर्ति की भीख, विषयों की भीख, शिष्यों की भीख, मंदिर बनाने की भीख, सभी भीख, भीख और भीख ही है! वहाँ अपनी दरिद्रता कैसे दूर होगी?

जिसे 'कुछ भी नहीं चाहिए,' उसका सारा काम हो जाता है। चीज़ सामने आ जाए तब भी नहीं चाहिए। आपको तो चाहिए न? क्या-क्या चाहिए?

मान की कामना वही भीख

प्रश्नकर्ता : ऐसा पता चलता है कि अभी तक मान चाहिए।

दादाश्री : मान चाहिए उसमें हर्ज नहीं है लेकिन क्या मान के लिए उपयोग रहा करता है कि मान कैसे मिले? ऐसा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा उपयोग नहीं रहता।

दादाश्री : फिर यदि मान नहीं मिले तो?

प्रश्नकर्ता : तो कोई परेशानी नहीं।

दादाश्री : तब उसमें परेशानी नहीं है। वर्ना मान की कामना हो तो उसी को भीख कहते हैं। किसी भी चीज़ की कामना, वह भीख कहलाती है। कामना, भीख वगैरह को निकाली नहीं माना जाता। कामना, भीख लगभग नज़दीकी शब्द हैं। वर्ना, (मान में) यदि उस तरफ उपयोग नहीं जाए तो कुछ स्पर्श ही नहीं करेगा। इससे (मोक्ष) मार्ग नहीं रुंधता लेकिन भीख वाला तो 'दूसरे मार्ग पर चला गया', ऐसा कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कोई मान दे और अच्छा लगे तो, उसे मान की भीख कहते हैं?

दादाश्री : नहीं। अच्छा लगता है, वह तो स्वाभाविक रूप से अच्छा लगता ही है। आपको चीनी वाली चाय पसंद है या बिना चीनी की? चीनी वाली चाय स्वाभाविक रूप से अच्छी ही लगती है लेकिन यदि कोई कहे कि, 'भाई, मुझे तो बगैर चीनी की ही चाय अच्छी लगती है, बोलो!' तब मैं कहूँगा कि यह अहंकार है। इसके बजाय चीनी वाली चाय पी न, चुपचाप। स्वादिष्ट तो रहेगी! सही है या गलत?

प्रश्नकर्ता : अब, यदि मान अच्छा लगे तो वह कैसा कहलाएगा?

दादाश्री : वह पसंद है तो उसमें हर्ज नहीं है। पसंद तो आएगा न! लेकिन अर्थात् मान की इच्छा नहीं होनी चाहिए। मान दिया जाए और

आपकी थाली में आए तो खाओ चैन से। धीरे से, शांति से खाओ, रौब से खाओ लेकिन उसकी इच्छा नहीं होनी चाहिए। उसकी आदत मत डाल देना, 'हैबिच्युएटेड' मत हो जाना।

प्रश्नकर्ता : वह मान नीचे नहीं गिरा देगा?

दादाश्री : वह तो, अभिमान नीचे ले जाता है। यानी लोग मान दें तो चखने में हर्ज नहीं है लेकिन साथ-साथ ऐसा भी रहना चाहिए कि 'यह नहीं होना चाहिए।' और मान देने वाले पर राग नहीं होना चाहिए।

मान में कपट : मान की विकृति

प्रश्नकर्ता : इस मान को चखे तो फिर वह जागृति को 'डाउन' नहीं करता, दादा?

दादाश्री : जागृति कम ही हो जाती है न! अब जहाँ मान में कपट हो, वहाँ पर जागृति उत्पन्न नहीं होती। जहाँ मान में कपट हो (उसे) वहाँ मान दिखाई ही नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : मान सहज रूप से मिले तो चखने में हर्ज नहीं है लेकिन वह फिर विकृत होने लगे और उसकी इच्छा होती है। ऐसा होता है न, फिर?

दादाश्री : ऐसा सब होता है लेकिन वैसी इच्छा तो होनी ही नहीं चाहिए और इच्छा हो तो नुकसानदाई है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मान की वह विकृति कौन-कौन सी और किस हद तक की हो सकती है?

दादाश्री : बहुत तरह-तरह की विकृतियाँ होती हैं। मान की विकृतियाँ तो बहुत सी हैं और वह मान की विकृति ही इंसान को पीछे धकेल देती है। यानी मान चखने में हर्ज नहीं है। कोई आप से कहे 'आइए, पधारिए साहब, ऐसा है, वैसा है।' आप वह मान आराम से चखो-करो लेकिन उसका आपको कैफ नहीं चढ़ जाना चाहिए। हाँ, चखो आराम से और अंदर संतोष होगा लेकिन यदि कैफ चढ़ा तो वह हो जाएगा कुरूप!

बाकी, जब तक मान है तब तक इंसान कुरूप दिखता है और कुरूप बना इसलिए किसी को आकर्षण नहीं होता। कुरूप दिखता है या नहीं दिखता? चेहरे पर रूप होता है फिर भी कुरूप दिखता है।

मान किससे टिका हुआ है? खुद सामने वाले को हल्का मानता है इसलिए मान टिका हुआ है। इसलिए उसे हल्का मत मानना और 'यह तो मेरा *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) है' ऐसा कहना, तो मान चला जाएगा।

इसलिए कृपालुदेव ने लिखा है कि इस जगत् में मोक्ष किस वजह से नहीं हो पाता? तब कहते हैं कि लोभ वगैरह का कोई झंझट नहीं है लेकिन यदि मान नहीं होता तो यहीं पर मोक्ष हो जाता! मान पर ही *लक्ष* (जागृति) रखना। मान ही इस संसार का मुख्य कारण है।

मान की अपेक्षा से हुए हैबिच्युएटेड

मेरे बड़े भाई ज़बरदस्त खुमारी वाले थे। मेरे बड़े भाई को मैं मानी कहता था, जबकि वे मुझे मानी कहते थे। तब एक दिन मुझ से क्या कहा? 'तेरे जैसा मानी मैंने नहीं देखा।' मैंने पूछा, 'किसमें मेरा मान देख रहे हैं?' तब कहा, 'हर एक बात में तेरा मान रहता है।'

और उसके बाद मैंने जाँच की तो सभी बातों में मेरा मान दिखाई दिया और वही मुझे काटता था। और मान के लिए क्या किया? हर कोई बुलाता कि 'अंबालाल भाई, अंबालाल भाई!'

अब 'अंबालाल' तो कोई कहता ही नहीं था न! छः अक्षरों से बोलता और फिर आदत पड़ गई, 'हैबिच्युएटेड' हो गए उससे। अब मान बहुत भारी था इसलिए मान का रक्षण करते थे न! तब फिर 'अंबालाल भाई' के छः अक्षर नहीं बोले और जल्दबाज़ी में कोई 'अंबालाल' बोल उठे तो वह क्या कोई गुनाह है उसका? छः अक्षर एक साथ एकदम जल्दबाज़ी में कैसे बोले जा सकते हैं?

अब सामने वाला 'अंबालाल भाई' नहीं कहे तो मुझे पूरी रात नींद नहीं आती थी, बेचैनी होती रहती थी। लो! उससे क्या मिल जाता? इससे क्या मुँह मीठा हो जाता? उसमें कोई स्वाद ही नहीं होता फिर भी मान बैठा है, वह भी लोक संज्ञा से। लोगों ने बड़ा बनाया और लोगों ने बड़ा माना भी सही! अरे, लोगों के माने हुए का क्या करना है?

ये गाय-भैंस अपने सामने देखती रहती हैं, और फिर कान हिलाएँ तो हमें ऐसा समझ जाना है कि ये हमें मान दे रही हैं? ऐसा है यह सब तो! अपने मन में मान लेते हैं कि ये लोग सब मान सहित देख रहे हैं, मन में मान लेते हैं! वे तो सभी अपने-अपने दुःख में है बेचारे, अपनी-अपनी चिंता में हैं।

वह सभी मान के लिए ही

ज्ञान हुआ उससे पहले मैंने लोगों से कहा था, 'आपका काम करवा जाना मुझ से, जो कुछ भी हो, वह। सलाह मशवरा, और कुछ भी हो! मेरे पास पैसे होंगे तो वे भी दूँगा लेकिन आपका काम करूँगा। आपको मेरा काम नहीं करना है।' क्योंकि अगर आपको मेरा काम करने को मना करूँ न, तो आपको मेरी तरफ से भय नहीं रहेगा।

आज से पैंतालीस साल पहले (बहुत सालों पहले) मामा की पोल बहुत उत्तम मानी जाती थी। उन दिनों हम मामा की पोल में रहते थे और पंद्रह रुपए किराया। उन दिनों लोग सात रुपए के किराए में पड़े रहते थे, हम पंद्रह रुपए में। यों बड़े कॉन्ट्रैक्टर कहलाते थे। अब वहाँ बंगले में रहने वाले आते थे मोटर लेकर क्योंकि परेशानी में फँसे हुए होते थे, वे यहाँ पर आते थे। वे उल्टा-सीधा करके आए होते थे न, तब भी उन्हें 'पिछले दरवाज़े' से निकाल देता था। (कुछ गलत करके आए हो तो युक्ति द्वारा बचने का रास्ता बता दूँ) 'पिछला दरवाज़ा' दिखाता कि यहाँ से निकल जाओ। अब गुनाह उसने किया और 'पिछले दरवाज़े' से मैं छुड़वा देता था। यानी गुनाह मेरे सिर पर लिया। किसलिए? मान खाने के लिए! 'पिछले दरवाज़े' से निकाल देना, क्या वह गुनाह नहीं है? यों फिर अक्ल लगाकर दिखाया था, उससे फिर वे बच जाते थे इसलिए फिर वे हमें मान सहित रखते लेकिन गुनाह हमें लगता था। फिर समझ में आया कि अभानता में ये सभी गुनाह हो जाते हैं, मान खाने के लिए। फिर मान पकड़ में आया। (फिर भी) बहुत चिंता होती थी मान की!

इस मान का ही था कि ''मैं कुछ हूँ,' सभी लोगों से बढ़कर 'मैं कुछ हूँ,'' वह सब गलत था। कोई बरकत नहीं थी। बस, इतना ही कि मान बैठे थे।

प्रश्नकर्ता : आपने मान को पकड़ा फिर मान को कैसे मारा?

दादाश्री : मान मरता नहीं है। मान को यों (मान गलत है, ऐसा समझकर) उपशम किया। बाकी, मान मरता नहीं है क्योंकि मरने वाला खुद ही है, किसे मारेगा? खुद अपने आपको कैसे मार सकता है? आपको समझ में आया न?

अपमान करने वाला को उपकारी मानना

कई लोग ऐसा कहते हैं न कि 'मेरी कीमत नहीं की?' तेरी कीमत थी ही क्या? तू इस समुद्र से पूछकर आ कि तेरी कीमत कितनी है? एक लहर आएगी और खींच ले जाएगी! कितनी ही लहरों का मालिक, तेरे जैसे कितने ही लोगों को वह खींच ले गया! कीमत तो उनकी है जिन्हें राग-द्वेष नहीं होते!

प्रश्नकर्ता : अब तो ये मान-अपमान बहुत चुभते हैं, इनसे मुक्त कैसे हो सकते हैं?

दादाश्री : अपमान चुभता है या मान चुभता है?

प्रश्नकर्ता : यों तो अपमान।

दादाश्री : अरे, मान भी बहुत चुभता है। यदि मान भी ज़रा ज़्यादा दे न तो इंसान खड़ा हो जाता है। मान बहुत दे न तो वहाँ से ऊबकर भाग जाता है इंसान। यदि हर रोज़ पूरे दिन मान देते रहें न, तो इंसान ऊबकर वहाँ से भाग जाता है। अपमान तो घड़ीभर भी अच्छा नहीं लगता। मान तो कुछ समय तक अच्छा भी लगता है। इसके बावजूद इंसान अपमान सहन कर सकता है, मान सहन नहीं कर सकता। हाँ, मान सहन करना तो सीसा पीने के बराबर है।

प्रश्नकर्ता : इसके बावजूद भी अपमान अच्छा न लगे तो उसे क्या कहा जाएगा?

दादाश्री : अपमान अच्छा न लगे, वह तो बहुत ही गलत कहा जाएगा। वह अच्छा लगे ऐसी शक्ति लोगों में उत्पन्न नहीं हुई है। उन्हें तो अपमान करने वाला किराए पर रखना चाहिए लेकिन कोई किराए पर रखता ही नहीं है न! लेकिन किराए वाला सचमुच का अपमान नहीं करेगा न! और लोग तो, जब कोई सचमुच में अपमान करे, तब दु:खी हो जाते हैं। जो सचमुच में अपमान करे, उसे उपकारी मानना लेकिन तब इंसान दु:खी हो जाता है। वास्तव में जब कोई अपमान करे तब दु:खी नहीं हो जाना चाहिए। अत: जब कोई अपमान करने वाले मिल जाएँ न तो बहुत उपकारी मानकर 'यह साथ ही रहे तो बहुत अच्छा' ऐसा तय करना।

मत रहना मान के पक्ष में

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि अपमान सहन करना सीख जाना चाहिए?

दादाश्री : जब मान चला जाएगा, तब अपमान सहन करने की शक्ति आ जाएगी। 'मान ने' गुरखा रखा है कि यदि कोई अपमान करने आए तो उससे कहता है कि, 'तेल निकाल देना।' क्रोध वह मान का गुरखा है और दूसरा है लोभ। उसने भी एक गुरखा रखा है। उसने कपट को (नाम का) रखा है। उसी को माया कहा गया है। अगर लोभ चला जाए तो माया भी चली जाएगी। क्रोध मान का गुरखा है।

जब तक मान नाम का शत्रु बैठा रहे, तभी तक क्रोध बैठा रह सकता है। क्रोध तो मान का रक्षण करने के लिए है। अत: जब तक मान है, तब तक गुरखा रहेगा ही।

'मूर्ख हो, बेअक्ल हो' किसी ने अगर ऐसा कह दिया, तब हमें कहना चाहिए, 'भाई, मैं आज से नहीं, पहले से ऐसा ही हूँ।' ऐसा कहना।

लोग क्रोध को मारते हैं न? कोई लोभ को मार-मारकर कम करता है, तब माया क्या कहती है? माया कहती है कि, ''मेरे छ: पुत्र हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ, राग और द्वेष। ये मेरे छ: बेटे और मैं सातवीं, हमें कोई निर्वंश नहीं कर

सका है। हाँ, सिर्फ 'ज्ञानीपुरुष' ही हमें निर्वंश कर सकते हैं। बाकी, कोई हमें निर्वंश नहीं कर सकता। तू चाहे जितना मेरे क्रोध को मारेगा, तू लोभ को मारेगा लेकिन जब तक मेरा मान नाम का बेटा जीवित है, तब तक सब जीवित हो जाएँगे।''

ध्येय चूका और घुसी भीख

यह भीख नहीं जाती। मान की भीख, कीर्ति की भीख, विषय की भीख, लक्ष्मी की भीख... भीख, भीख और भीख! बिना भीख वाले देखे हैं क्या? आखिर में मंदिर बनवाने की भी भीख होती है इसलिए मंदिर बनाने में पड़ते हैं! क्योंकि कोई काम नहीं मिले, तब कीर्ति के लिए यह सब करते हैं! अरे, किसलिए मंदिर बनवाते हो? हिंदुस्तान में कहाँ पर मंदिर नहीं हैं? लेकिन ये तो मंदिर बनवाने के लिए पैसा इकट्ठा करते रहते हैं। भगवान ने कहा था कि मंदिर बनाने वाले तो, उनके कर्म के उदय होंगे तो बनवाएँगे। तू किसलिए इसमें पड़ता है?

हिंदुस्तान का मनुष्य धर्म सिर्फ मंदिर बनवाने के लिए नहीं है। सिर्फ मोक्ष में जाने के लिए ही हिंदुस्तान में जन्म है। एक अवतारी हुआ जाए, उस तरफ का ध्येय रखकर काम करना तो पचास जन्म में भी, सौ जन्म में या पाँच सौ जन्म में भी हल आ जाएगा। दूसरा ध्येय छोड़ दो। फिर शादी करना, बच्चों का बाप बनना, डॉक्टर बनना, बंगले बनवाना, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन ध्येय एक जगह पर ही रख कि हिंदुस्तान में जन्म हुआ है तो मुक्ति के लिए साधन कर लेना है। इस एक ध्येय पर आ जाओ तो हल आ जाएगा!

बाकी, किसी प्रकार की भीख नहीं होनी चाहिए। इस तरह धर्म के लिए दान लिखवाओ, फलाना लिखवाओ, वैसी अनुमोदना में हाथ नहीं डालना चाहिए। करना, करवाना और अनुमोदन करना वहाँ पर नहीं होना चाहिए। हम तो सर्व भीखों से मुक्त हो चुके हैं। मंदिर बनवाने की भी भीख नहीं है क्योंकि हमें इस जगत् की कोई भी चीज़ नहीं चाहिए। हम मान के भिखारी नहीं हैं, कीर्ति के भिखारी नहीं हैं, लक्ष्मी के भिखारी नहीं हैं, सोने के भिखारी नहीं हैं, शिष्यों के भिखारी नहीं हैं। हमें विषयों के विचार नहीं आते, लक्ष्मी का विचार नहीं आता। विचार ही जहाँ आते नहीं, वहाँ फिर भीख किस चीज़ की रहेगी? मान की, कीर्ति की, किसी भी प्रकार की भीख नहीं है।

तख्ती के मोह में डूबे प्योरिटी

हम सभी जगह मंदिरों में गए। वहाँ बहुत-सी जगह पर तो पूरी दीवार तख्तियों से भरी हुई थी! उन तख्तियों की वैल्यूएशन (कीमत) कितनी? अर्थात कीर्ति के हेतु के लिए! और जहाँ कीर्ति के लिए ढेरों हों, वहाँ व्यक्ति देखता ही नहीं कि इसमें क्या पढ़ने जैसा है? पूरे मंदिर में एक ही तख्ती हो तो पढ़ने के लिए फुरसत होती है, लेकिन ये तो इतनी सारी, पूरी की पूरी दीवारें ही उन नेम प्लेटों (तख्तियों) से भरी हुई होती है तो फिर क्या होगा? फिर भी लोग कहते हैं कि मेरे नाम की तख्ती लगवाना! लोगों को तो तख्ती ही पसंद है न!!

कोई व्यक्ति लाख रुपए दान दे और तख्ती लगवाए और कोई व्यक्ति यदि एक ही रुपए दान में दे लेकिन वह उसे गुप्त रखे तो यह गुप्त रूप से जो दिया उसकी बहुत कीमत है, यदि तख्ती लगवाई उससे तो 'बैलेन्स शीट' पूरी हो गई। सौ का नोट आपने मुझे दिया और मैंने आपको चिल्लर पैसे दिए, उसमें मुझे लेना भी नहीं रहा

और आपको देना भी नहीं रहा! आपने यह धर्म में दान करके खुद की तख्ती लगवा दी, उसके बाद लेने देने का कुछ रहा ही नहीं न! क्योंकि जो दान किया, उसके बदले यहाँ पर तख्ती लगवाकर ले लिया और जिसने एक ही रुपया गुप्त रुप से दिया होगा उसने कुछ लिया नहीं इसलिए उसका बैलेन्स बाकी रहा।

मीठी बातों करने में मज़ा नहीं है

लोग तो कहने आएँगे कि, 'आओ काका' आपके बिना तो मुझे अच्छा नहीं लगता। आप कहो उतना सब काम कर दूँगा आपका, आपके पैर दबाऊँगा।' अरे यह तो मीठा-मीठा बोल रहा है। वहाँ पर बहरे हो जाना। समझ में आया न?

हमें ठगने वाले भी आते हैं, ऐसे तारीफ करने वाले आते हैं लेकिन मैं ठगा नहीं जाता! हमारे पास लाखों लोग आते होंगे, तारीफ करते हैं, सब कुछ करते हैं लेकिन राम तेरी माया! और यहाँ कुठ मिठास ही नहीं मिलती न! वे जानते हैं कि दादा के पास कुछ हो नहीं पाएगा इसलिए वापस चला जाता है!

फिर वह ऊब जाता है कि 'इन दादा के पास में कुछ हो सके, ऐसा नहीं लगता। भविष्य में यह खिड़की खुलेगी नहीं' अरे, मुझे कुछ नहीं चाहिए, खिड़की खोलने क्यों आया है? जिसे चाहिए, वहाँ पर जाओ न! चाहे कैसे भी लोग आएँ फिर भी उन्हें वापस भगा देता हूँ कि 'भाई यहाँ पर नहीं'।

इसलिए सब सरल हो गया है तो अब अपना काम पूर्ण कर लो। इतना सरल नहीं मिलेगा। ऐसा चान्स दोबारा नहीं आएगा। यह चान्स उत्तम है न, इसलिए यह दूसरी सारी मिठास कम होने दो न! इन मीठी बातों में मज़ा नहीं है। मीठी बात करने वाले लोग तो मिलेंगे लेकिन उसमे आप का हित नहीं है इसलिए अब मिठास का शौक जाने दो, एक जन्म! अब तो आधा ही जन्म बचा है न! अब पूरा जन्म कहाँ बचा है?

विशेषता है मान की विकृति

अन्य लोगों में और खुद में फर्क मत मानना। यह तो विशेषता दिखाने के लिए बोलते हैं और वही सारे कषाय करवाते हैं न! हमारा एक भी वाक्य विशेषभाव वाला नहीं होता। कुदरती रूप से ही निकलता रहता है क्योंकि हमारी 'रिकॉर्ड' है न! आपकी वाणी 'रिकॉर्ड' हो जाए तो फिर परेशानी नहीं है। 'रिकॉर्ड' हो जाए, उसके बाद हो चुका। अभी 'रिकॉर्ड' नहीं बनी है। नहीं?!

कोई दो लोग बात कर रहे हों न तो अक्लमंदी दिखाने का मन होता है लेकिन उसे 'ज्ञान' नहीं कहते। प्रश्नों का खुलासा नहीं दे सकते। एक अक्षर भी नहीं बोल सकते। सिर्फ सहज रूप से बातचीत कर सकते हैं। यह स्पर्धा और विवाद करने जैसी चीज़ नहीं है। स्पर्धा नहीं होनी चाहिए। स्पर्धा वाली सारी चीज़ें सांसारिक हैं!

मान के सामने सावधान रहना

अत: (मोक्ष का) काम पूर्ण कर लेना हो तो सावधान रहना। हो सके तब तक किसी जगह पर बातचीत नहीं करनी है। लोगों को यह ज्ञान समझाने मत जाना नहीं तो क्या से क्या हो जाएगा! वीतराग की वाणी का एक शब्द भी बोलना, वह तो सब से बड़ी मुश्किल है!

लोग तो चिपट पड़ेंगे, लोगों का क्या? लोग तो समझेंगे कि हमें कुछ मिलेगा। कुछ प्राप्त हो जाए, उसके लिए लोग चिपट पड़ेंगे या नहीं? लेकिन लोगों से कह देना कि, 'इसमें मेरा काम

नहीं है।' एक अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए। वर्ना उसमें खुद का क्या से क्या हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो अनुभव हुए हों, वे कह सकते हैं न?

दादाश्री : अनुभव तो है ही नहीं। अनुभव तो धीरे-धीरे होता है। यह तो सारी बातें निकलती हैं, वे हमारे कहे हुए शब्द ही निकलते हैं। वे शब्द उग निकलते हैं सारे।

अर्थात् पूरा वीतराग विज्ञान हाज़िर हो जाना चाहिए। विज्ञान का अंश तो किसी को पता है ही नहीं। यह तो हमारी जो वाणी अंदर उतर गई है, वह निकलती है और अगर कोई बड़ा तीसमारखाँ आ जाए न तो तोड़ ही देगा, तीन ही शब्दों में तोड़ देगा। बुद्धिगम्य चलेगा ही नहीं न! बुद्धिगम्य क्या जगत् के पास नहीं है? अरे, बड़े-बड़े शास्त्र के शास्त्र कंठस्थ किए हुए लोग हैं। वे एक भी शब्द बोलेंगे तो उलझ जाओगे।

यह तो हमारा दिया हुआ 'ज्ञान' परिणामित हुआ तो परिणामित होकर फिर उसमें उगता है वापस। हमारा दिया हुआ जो बीज के रूप में पड़ा रहता है, वह उगता है। तब 'दादाजी ऐसा कह रहे थे' ऐसे करके बात करो लेकिन यदि ऐसे वाणी निकलेगी, तो कुछ दिन तो ऐसा लगेगा कि ये 'दादाजी' जैसा ही कह रहे हैं। बाद में न जाने कहाँ ले जाएगा! कुछ दिन बाद गिरा देगा, वह तो छोड़ेगा नहीं न!

सावधान रहना भीतर के अहंकार से

किसी जगह पर (यह ज्ञान की) कोई बात करते हो? बातचीत में कहीं भी पड़ना ही मत, क्योंकि लोग तो सुनेंगे लेकिन खुद की क्या दशा होगी? लोगों को तो कान से सुनकर निकाल देना है लेकिन खुद को भी 'इन्टरेस्ट' आता है इसमें क्योंकि अभी 'इगोइज़म' है न, वे सभी अंदर ताक लगाकर बैठे ही रहते हैं। तो धीरे-धीरे उन्हें खुराक मिल जाती है।

अभी अंदर यह अहंकार वगैरह सब कम हुए बिना क्यों गाते रहते हो? किसी को चार आने का भी फायदा नहीं होगा और बेकार ही गाते रहने का अर्थ ही नहीं है न! उस घड़ी वे शब्द तो सभी को अच्छे लगते हैं। लोग कहेंगे भी कि, 'बहुत अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है' लेकिन उससे तो खुद का 'इगोइज़म' बढ़ जाता है और लोगों को कुछ भी काम नहीं आता। सिर्फ इतना ही है कि ऊपर सुगंधी आती है! मुँह में जलेबी गई भी नहीं, बस सुगंधी आई उतना ही!

कच्चा रखना हो तो वह रास्ता सरल है, मिठास भी अच्छी रहेगी लेकिन खुद यदि ज़रा सा भी कच्चा पड़ेगा न तो अहंकार वगैरह सब अंदर बैठे हुए हैं ही ताक लगाकर कि कब खुराक मिल जाए। भीतर अहंकार खुराक ढूँढ ही रहा है। हर एक में अंदर अहंकार तो बैठा हुआ है ही। अहंकार चढ़ बैठे न तो वह फिर सिर्फ दलाली ही नहीं ढूँढता। अभी तो दलाली ढूँढता है लेकिन बाद में तो फिर मूल रकम को और आपको खुद को भी खा जाएगा! वह तो अंदर है ही। इसलिए जानते रहना है कि जब तक इस अहंकार की हाज़िरी है तब तक और किसी चीज़ में नहीं पड़ना है। जिससे अहंकार को 'स्कोप' मिले, वैसा रास्ता मत देना।

अपने ज्ञान का एक बाल जितना भी कहने जाएगा तो लोग टूट पड़ेंगे (मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।) लोगों ने ऐसी शांति देखी नहीं है, ऐसा सुना नहीं है, इसलिए टूट पड़ेंगे न! और वह अहंकार अंदर बैठा-बैठा हँसता रहेगा, 'हाँ, चलो, अपनी खुराक

मिली!' अनादि से ढूँढ ही रहा है! पूर्णाहुति करनी है या अधूरा रखना है? कच्चा रखना है? पूर्ण करना हो तो किसी भी जगह पर कच्चे मत पड़ना। कोई पूछे न, तब भी कच्चे मत पड़ना।

प्रश्नकर्ता : अहंकार का यह जो रस अधिक चख लेता है उसके कारण वापस ऐसे गिरना पड़ता है न?

दादाश्री : हाँ और क्या! इसमें तो बहुत मिठास आती है। वह अहंकार ही यह सब करवाता है हम से कि 'यह तो बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है, लोगों को अच्छा लगा।' जब मीठा लगे न, तब जान लेना कि मार पड़ने वाली है।

यानी अंदर 'इगोइज़म' का रस नहीं पड़ना चाहिए, बुद्धि का रस नहीं पड़ना चाहिए। उसमें फिर बुद्धि का अभाव हो जाना चाहिए, 'इगोइज़म' का अभाव हो जाना चाहिए और उसका भी अभ्यास होना चाहिए तब काम का! तब तक धीरज रखना अच्छा!

पूर्णता के बगैर गिरा देता है 'उपदेश'

जब तक पूर्णाहुति नहीं हो जाए, तब तक (ज्ञान से संबंधित) कुछ बोलने में पड़ना ही मत। यह पड़ने जैसी चीज़ नहीं है। हाँ, हम किसी को इतना कह सकते हैं कि, 'वहाँ पर सत्संग अच्छा है। ऐसा सब है, वहाँ पर जाओ।' इतनी बातचीत कर सकते हैं। उपदेश नहीं दे सकते। यह उपदेश देने जैसी चीज़ नहीं है। यह 'अक्रम विज्ञान' है।

'दादा' का ज्ञान जिसने प्राप्त किया है, उस ज्ञान में से जो माल निकलता है न, उसे सुनकर तो पूरी दुनिया सबकुछ धर देगी और धर देने पर तो क्या होता है? फँसता है फिर! सभी कषाय जो उपशम हो चुके थे न, वे फटाफट जागृत हो उठेंगे। आकर्षक वाणी है यह। यह ज्ञान आकर्षक है इसलिए मौन रहना। यदि पूरा हित चाहते हो तो मौन रहना। अगर दुकान जमानी हो तो बोलने की छूट है और दुकान चलेगी भी नहीं। दुकान खोलोगे तो भी नहीं चलेगी, खत्म हो जाएगी क्योंकि 'दिया हुआ ज्ञान' है न तो उसे खत्म होने में देर नहीं लगेगी। दुकान तो क्रमिक मार्ग में चलती है। दो जन्म, पाँच जन्म या दस जन्म तक चलती है और फिर वह भी खत्म हो जाती है। दुकान खोलना यानी सिद्धि बेच देना। आई हुई सिद्धि को बेचने लगे, दुरुपयोग किया!

गोशाला जो था न, वह पहले तो महावीर भगवान का शिष्य था, खास, 'स्पेशल' शिष्य लेकिन अंत में वह विरोधी बनकर खड़ा रहा। गोशाला महावीर भगवान के पास बहुत समय तक रहा। फिर उसे ऐसा लगा कि मुझे यह सारा ज्ञान समझ में आ गया, इसलिए भगवान से अलग होकर कहने लगा कि 'मैं तीर्थंकर हूँ, वे तीर्थंकर नहीं हैं' और कितनी बार तो ऐसा भी कहता था कि, 'वे भी तीर्थंकर हैं और मैं भी तीर्थंकर हूँ।' अब ऐसा रोग घुस गया तो फिर क्या दशा होगी उसकी?!

अब, जब महावीर भगवान के पास था तब भी वहाँ पर सीधा नहीं रहा तो हमारे पास बैठा हुआ कैसे सीधा रहेगा? यदि कुछ गड़बड़ हो जाए तो क्या दशा होगी? और वह तो चौथे *आरे* की बात थी। यह तो पाँचवाँ *आरा* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) है, अनंत जन्म खराब कर देगा।

अनादि से यों ही मार खाई है न, लोगों ने! यही की यही मार खाता रहा है। ज़रा सा भी स्वाद मिल जाए कि चढ़ ही जाता है ऊपर!

पूजें जाने की कामना वही सब से बड़ा रोग

क्या पूजे जाने की (कोई मेरी पूजा करे,

ऐसी) कामना होती है? बता देना, मैं उसे दबा दूँगा। हाँ, यह जड़ काट देंगे तो फिर बंद हो जाएगा। यह कामना बहुत खतरनाक है। कामना नहीं होती है न? कभी होने लगेगी। क्या! अत: ऐसा मानकर चलना कि जोखिम है। क्योंकि लोग 'जय-जयकार' करते हैं न, तब चाय की लत की तरह लत लग जाती है फिर जब नहीं मिलता है न, तब परेशान हो जाता है। उसके बाद कुछ नाटक करके 'जय-जयकार' करवाता है। अत: जोखिम है, सावधान रहना। किस चीज़ की भीख है। पूजे जाने की भीख है। जब यों 'जय-जयकार' करते हैं तो खुश। अरे! यह तो नर्क में जाने की निशानियाँ हैं! यह तो बहुत ही जोखिमदारी है। ऐसी आदत पड़ जाए तो वह जाती नहीं है।

प्रश्नकर्ता : खुद को पूजे जाने की कामना है या नहीं, उसका उसे खुद को कैसे पता चलता है?

दादाश्री : सबकुछ पता चलता है खुद को। उसे क्या अच्छा लगता है वह पता चलता है। क्या यह पता नहीं चलता कि आइस्क्रीम भाती है? अंदर थर्मामीटर है आत्मा! सब पता चलता है।

आज के जीव लालची बहुत हैं। वह खुद का ही शुरू करते हैं जगह-जगह पर, पूजे जाने के लिए सबकुछ करते हैं। और पूजे जाने की कामना रखनेवाले फिर कभी नया धारण नहीं कर सकते, सच्ची बात। हर कहीं पर लोग दुकान लगाकर बैठ गए हैं और पूजे जाने की कामना अंदर भरी रहती है कि ''किस तरह मुझे 'जय-जय' करे।'' तो उसे अंदर मन में मीठा लगता है। कोई 'जय-जय' करे तो मीठा लगता है। इतना मज़ा आता है वास्तव में!

उल्टा रास्ता है यह सारा! पूजे जाने की कामना जैसा भयंकर कोई रोग नहीं है। सब से बड़ा रोग हो तो पूजे जाने की कामना! किसे पूजना है? आत्मा तो पूज्य ही है। देह को पूजना रहा ही कहाँ फिर! लेकिन पूजे जाने की इच्छाएँ-लालच है सारा। देह को पुजवाकर क्या हासिल करना है? जिस देह को जला देना है, उसे पुजवाकर क्या हासिल करना है? लेकिन यह लालच ऐसा है कि 'मेरी पूजा करे' इसलिए ये पूजे जाने की लालसाएँ हैं। नहीं तो मोक्ष कोई मुश्किल नहीं है। ऐसी जो नियत होती है न, उससे मुश्किल है।

ऐसी इच्छा होना भी भयंकर गुनाह है। ऐसी इच्छा कभी हुई थी? अंदर थोड़ी कुलबुलाहट होती है? यह तो हम सावधान कर रहे हैं। सावधान नहीं करेंगे तो फिर गिर जाएगा न! अच्छी जगह पर आने के बाद गिर जाए तो फिर बेकार हो जाएगा, 'यूज़लेस' हो जाएगा और चोट भी बहुत लगेगी। नीचे हो और गिर जाए तो बहुत चोट नहीं लगती। बहुत ऊपर तक दौड़कर गिर जाए तो बहुत चोट लगती है इसलिए जहाँ हो वहीं पर रहना, नीचे मत उतर जाना वापस।

कोई भी स्वतंत्र शब्द मत लाना। यहाँ से ले जाकर उसी शब्द का उपयोग करना, स्वतंत्र नया मत रखना। नया स्टेशन भी मत बनाना या फिर बनाया है? नींव नहीं डाली? नहीं बनाया? चेतावनी तो होनी चाहिए न! वर्ना तो न जाने कहाँ जाकर खड़े रहोगे! अभी तो मार्ग बहुत अलग तरह का है यह। कितनी सारी ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं! कभी भी देखी नहीं हो ऐसी लुभावनी जगहें आती हैं! जहाँ बड़े-बड़ों ने धोखा खाया है वहाँ आपकी क्या बिसात? इसलिए 'दादा भगवान' के इस मार्ग पर चलो अच्छी तरह। हेय! 'क्लिअर रोड फर्स्ट क्लास'! जोखिम नहीं, कुछ नहीं!

समझ हिताहित की

अभी तो, सांसारिक हित का भान किसे

कहेंगे? जिसमें नैतिकता की कक्षा हो, प्रामाणिकता की कक्षा हो, जिसका लोभ नॉर्मल हो, जिसमें कपट नहीं हो, मान भी नॉर्मल हो, उसे सांसारिक हित का भान कहेंगे। वर्ना जो एब्नॉर्मल लोग हैं, उन्हें कहीं हित का भान रहता होगा? जो लोभांध हो चुका हो, वह न जाने किसके साथ सिर टकरा दे, वह कैसे कहा जा सकता है? जिसे सांसारिक हित का भान हो, वह मनुष्य कहलाता है। वर्ना इनका तो यदि फोटो खींचें तो लोग कहेंगे ज़रूर कि मनुष्य का फोटो है लेकिन भीतर मनुष्य के गुण नहीं हैं।

हमें इस मनुष्य जन्म में क्या काम करना है? तब कहें कि मोक्ष हेतु के लिए पर्याप्त हो उतना, उतना ही काम पूरा करना है। मोक्ष के हेतु के लिए जो साधन मिल जाएँ, उन साधनों की आराधना के लिए ही यह मनुष्य देह है।

ज्ञानी की समझ से समझ सेट करना

'ज्ञानीपुरुष' की समझ से समझ सेट करना है, 'पैरेलल टू पैरेलल।' वर्ना 'रेल्वे लाइन' उड़ जाएगी। 'खुद की' समझ तो डालनी ही नहीं है। अंदर समझ है ही नहीं न! रत्तीभर भी समझ नहीं है। खुद की समझ तो इसमें चलानी ही नहीं है। खुद में समझ है ही नहीं न! कुछ भी समझ नहीं है। यदि समझ होती न, तो भगवान बन जाता!

ये क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह तो सब दबे हुए हैं। अभी अगर ज़रा दबाव आए न तो वे भभक उठेंगे। इन क्रोध-मान-माया-लोभ को तीन साल तक यदि खुराक नहीं मिले तो फिर वे खुद-ब-खुद भाग जाएँगे। हमें कहना ही नहीं पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : ये सारी खुराक कषाय ही खा जाते हैं, तो क्या करना चाहिए?)

दादाश्री : वे तो खा जाएँगे। फिर भी 'दादाजी' की छत्रछाया है, कृपा से सब साफ (क्लियर) हो जाएगा, ऐसा है। खुद ही अगर इस सत्संग में से इधर-उधर हो गए तो तुरंत ही चिपट जाएगा सब। आपको तो 'दादाजी' का आसरा नहीं छोड़ना है। चरण नहीं छोड़ने हैं!

'अक्रम' यानी प्योरिटी का मार्ग

प्रश्नकर्ता : तो हमें आप लिफ्ट में बैठा देंगे न? बाकी की ज़िम्मेदारी आपकी है न?

दादाश्री : सारी ज़िम्मेदारी हमारी। अगर पाँचों आज्ञा का पालन करोगे तो महावीर भगवान जैसी दशा रहेगी, वह मैं लिखकर देता हूँ। पाँच आज्ञा का पालन करोगे न तो मैं गारन्टी लिखकर देता हूँ कि महावीर भगवान जैसी समाधि रहेगी आपको! अगर पाँच के बजाय एक का पालन करोगे न, तो भी ज़िम्मेदारी हमारी है। इन पाँच ही वाक्यों में पूरे वर्ल्ड का साइन्स आ जाता है।

अक्रम अर्थात् चौबीस तीर्थंकरों का निर्मल मार्ग, बिल्कुल प्योर! प्योरिटी! ज़रा भी इम्प्योरिटी नहीं, सौ प्रतिशत गोल्ड! ऐसा अक्रम मार्ग तो होता नहीं है न!

यदि खुद (ज्ञानीपुरुष) सभी तरह से निर्मल है तो आप में शक्ति न हो, तब भी आ ही जाएगी। ज्ञानीपुरुष के हाथों जो होता है, उसमें उनका वचन बल रहता है।

पछतावा करके कर लो निर्मल

इस काल में अभी भी कुछ समझने जैसा है। अब काल (समय) ऐसा आ रहा है, कि लगभग दो-तीन हज़ार साल तक अच्छा चलेगा। बहुत उच्च स्थिति आएगी। भगवान महावीर के

समय जैसी स्थिति आएगी इसलिए उस अरसे में लाभ उठा लोगे तो काम का है। अब नए सिरे से परिणति बदलनी है कि 'अब ज्ञानी के लिए ही जीना है।' बाकी का सब तो हिसाब है और वह तो मिलता ही रहेगा, आपको अपना काम करना है। उसका फल तो मिलता ही रहेगा। अन्य सभी भाव, अन्य परिणति बदलने जैसी है। वर्ना यह सब क्या साथ में ले जाओगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : इसलिए ऐसा है न, जो कुछ भी गलत किया है, उसके लिए पछतावा करो। अभी भी यदि पछतावा करोगे तो इस देह से जो पाप हुए हैं उन्हें पूर्ण रूप से नष्ट कर सकोगे। पश्चाताप की ही सामायिक करो। किसकी सामायिक? पश्चाताप की ही सामायिक। कैसा पछतावा? तो वह यह कि, 'मैंने लोगों से गलत पैसे लिए,' उनके सब के नाम लेकर जिनसे लिए होंगे, उनका चेहरा याद करके, 'फलानां व्यभिचार किया, दृष्टि बिगाड़ी' उन सभी पापों को धोना हो तो अभी भी धो सकते हो।

काम निकाल लो

आपके पास चाहे कितने भी रुपए हों लेकिन अंत में रुपए साथ में नहीं आएँगे इसलिए कुछ काम निकाल लो। अब दोबारा मोक्ष मार्ग नहीं मिलेगा। इक्यासी हज़ार साल तक मोक्ष मार्ग भी हाथ में नहीं आएगा। यह अंतिम 'स्टैन्ड' है, अब आगे 'स्टैन्ड' नहीं है।

हमारा दिया हुआ ज्ञान, वह तो एक्ज़ेक्ट अपनी जगह पर है। आपको जितना दृष्टि गम्य हुआ उतना आपका। अन्य दृष्टि गम्य नहीं हुआ है। मूल स्वरूप में जो ज्ञान दिया था, अभी आपको उस मूल स्वरूप की पूरी तरह से एक्ज़ेक्टनेस नहीं आई है। तब तक ऐसा लगेगा कि बढ़ रहा है। वर्ना यह ज्ञान तो वही का वही है, मूल स्वरूप में ही है लेकिन जब मूल स्वरूप की एक्ज़ेक्टनेस आएगी, तब फिर बाद में कम-ज़्यादा नहीं रहेगा। यह कम-ज़्यादा क्या है? आपको जो दृष्टि मिली है वह दिनोंदिन बढ़ती जाती है। मूल स्वरूपी होना चाहती है। जैसे दिया था वैसे, उस रूप होना चाहती है।

हार्ट की प्योरिटी से प्राप्त मूल स्वरुप

प्रश्नकर्ता : आप हम सब को भगवान बनाना चाहते हैं, वह तो जब बनेंगे तब सही। लेकिन अभी तो नहीं बने हैं न?

दादाश्री : लेकिन वैसा होगा न क्योंकि यह अक्रम विज्ञान है! जो बनाने वाला है वह निमित्त है और जिसे बनने की इच्छा है, वे दोनों जब मिलते रहेंगे तो वैसा होगा ही! बनाने वाला क्लियर है और हमारा क्लियर है, हमारी नियत कुछ और नहीं है इसलिए एक दिन सभी अंतराय टूट जाएँगे और भगवान बन जाएगा, जो हमारा मूल स्वरूप ही है!

यहाँ सभी (अंतिम दशा तक पहुँचने की) तैयारियाँ खोलकर रख दी हैं। जितनी आपकी हार्ट की प्योरिटी, जितना आप (प्योरिटी में रहकर) बटन दबाओ, उतना तैयार! यानी आपके बटन दबाने की देर है।

लोगों का कल्याण तो कब होता है? जब हम निर्मल हो जाएँगे तब, एकदम निर्मल! प्योरिटी ही सभी का, पूरे जगत् को आकर्षित करता है! प्योरिटी ! प्योर चीज़ जगत् को आकर्षित करती है। इम्प्योर चीज़ जगत् को फ्रैक्चर कर देती है। इसलिए (संपूर्ण) प्योरिटी लानी है।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

12 अगस्त : पूज्यश्री के विदेश प्रवास के बाद त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजति हुआ। दो महीनों के विराम बाद आयोजित इस सत्संग-ज्ञानविधि में दादानगर हॉल महात्मा व मुमुक्षुओं से पूरा भर गया था। दिनांक 13 को आयोजित ज्ञानविधि में 1250 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

15 अगस्त : अडालज त्रिमंदिर में जन्माष्टमी का महोत्सव भव्य आनंद व उल्लास से मनाया गया। अहमदाबाद व आसपास से लगभग पंद्रह हज़ार दर्शनार्थी मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए आए। 'आ अब लौट चले' नामक ज्ञानवर्धक विशेष प्रेज़न्टेशन और बच्चों के लिए हर तीस मिनट में पपेट शो का आयोजन हुआ था। पूज्यश्री ने शाम को मंदिर के प्रांगण में दर्शनार्थियों को दर्शन दिए। जायजेन्टिक हॉल में गोकुल गाँव का सुंदर मोडल तैयार किया गया और बीच में श्रीकृष्ण भगवान की बड़ी मूर्ति रखी गई। रात में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के समय जॉयजेन्टिक हॉल व मंदिर का सभामंडप संपूर्णत: भर गया था। रात को विशेष भक्ति के बाद YMHT बालिकाओं ने परम पूज्य दादाश्री द्वारा बताए गए श्रीकृष्ण भगवान के यथार्थ तत्त्वज्ञान की बातों पर प्रस्तुत करता हुआ सुंदर नाटक प्रस्तुत किया। YMHT & GNC के बच्चों द्वारा परेड, रास और नृत्य प्रस्तुत हुए। इस बार पूज्यश्री ने रिमोट से मटकी फोड़ी। पूज्यश्री ने जैसे ही रिमोट दबाया तो मटकी ब्लास्ट होकर फूट गई। बाद में पूज्यश्री ने भगवान श्रीकृष्ण को झूला झुलाया और पूजन-आरती और प्रसाद अर्पण किए। सभी त्रिमंदिरों में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव आप्तपुत्र व महात्माओं की हाज़िरी में उल्लासपूर्वक विशेष भक्ति कार्यक्रम द्वारा हुआ।

18-26 अगस्त : अडालज-दादानगर में आयोजित पारायण के दौरान आप्तवाणी-13 (उत्तरार्ध) के वांचन से पारायण की शुरुआत हुई। पूज्यश्री द्वारा प्रज्ञा, राग-द्वेष, वीतद्वेष जैसे टॉपिक्स का वाँचन और विस्तृत विवेचन हुआ। यह गहन विषय होने के बावजूद भी महात्माओं ने पारायण का आनंद उठाया और गहरी समझ प्राप्त की। संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण के वक्त बहुत सारे महात्माओं ने विशाल जनसमूह के समक्ष पूरी ज़िंदगी में हुए दोष ज़ाहिर किए व एक-दूसरे के पैरों में पकड़कर माफी माँगी और अंत में पूज्यश्री ने पूरी ज़िंदगी के हुए दोषों के प्रतिक्रमण व सामायिक करवाई। दस हज़ार से भी ज़्यादा महात्माओं ने इस पारायण का लाभ उठाया। पारायण के दूसरे दिन पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। दर्शन का 8600 से भी ज़्यादा महात्माओं ने लाभ उठाया। 'अरिहंत' चैनल पर पारायण का लाइव टेलिकास्ट हुआ। पुन: मुंबई त्रिमंदिर के निर्माण कार्य के लिए पूर्णत: मंजूरी मिल जाने के बाद अब बहुत ही जल्द मुंबई त्रिमंदिर का निर्माण पूर्ण होगा, पारायण में ऐसी घोषणा की गई।

8-11 सितम्बर : पूना में आयोजित पूज्यश्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम को सुंदर प्रतिसाद प्राप्त हुआ। पहले दो दिनों के सत्संग टॉपिक थे (1) ऋणानुबंध से छूटने के लिए (2) संसार जागृति- स्वरूप जागृति। विशेष करके मराठी व हिन्दी भाषीओं महात्मा और मुमुक्षुओं ने प्रश्न पूछे थें। महाराष्ट्र के बहुत सारे जिलों से मुमुक्षु ज्ञान प्राप्ति के लिए आए थें। स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ मॉर्निंग वॉक और 'दादा दरबार' के दौरान बातचीत और दर्शन का लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान पूज्यश्री ने (1) सत्य असत्य चे रहस्य (2) चमत्कार (3) पैश्याचा व्यवहार (4) वाणी व्यवहारात - इन चार मराठी अनुवादित पुस्तकों का विमोचन किया। ज्ञानविधि के दौरान 1260 मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। लगभग 2500 महात्माओं उपस्थित थें। कार्यक्रम के दौरान पूना के बाहर से आए महात्मा-मुमुक्षुओं के लिए आप्तपुत्र सत्संग व MMHT, WMHT & YMHT जैसे ग्रूप के लिए भी सत्संग का आयोजन हुआ। आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग में लगभग सौ नए ज्ञान लिए हुए महात्माओं ने भाग लिया।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'SAB-US'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'SAB-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)

Singapore
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)

Australia
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'SAB- International'** पर हर रोज़ दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 5 से 5-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA -Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE - **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)

USA-UK-Africa-Aus. - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

हरिद्वार में केवल 'हिन्दी भाषी महात्माओं' के लिए विशेष शिविर

29 नवम्बर - (शाम 4 बजे) से **3 दिसम्बर** - (दोपहर 1 बजे) तक - **हिन्दी सत्संग शिविर**

स्थल: पतंजलि योगपीठ फेझ-2, दिल्ली-हरिद्वार नेशनल हाइवे, हरिद्वार.

[रूरकी रेल्वे स्टेशन से 16 कि.मी. और हरिद्वार रेल्वे स्टेशन से 19 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।]

1- रियल-रिलेटिव की भेदरेखा - **दादावाणी - अप्रैल - 2016**

2 - जगत निर्दोष - व्यवस्थित कर्ता- **'निजदोष दर्शन से निर्दोष'** - पुस्तक

3 - परिणीतों को भी सिद्ध हो सके ब्रह्मचर्य- **दादावाणी - जनवरी 2009**

4 - समभाव से निकाल - **दादावाणी - जुलाई - 1998**

5 - जीवन रोशन, सेवा सिंचन से.. - **दादावाणी - अक्तूबर - 2007**, सत्संग का माहात्म्य - **दादावाणी - अक्तूबर - 2014**

6 - मान - **पेज नं - 259-336 - आप्तवाणी - 9** - पुस्तक

7 - बच्चों के पालनहार बनो, मालिक नहीं - **दादावाणी - जून - 2016**

8 - घर में क्लेश मिटाने की कला - **दादावाणी - सितम्बर - 2014**

उपरोक्त टोपिक पर शिविर के दौरान पूज्यश्री द्वारा सत्संग होगा, महात्माओं को बिनती है कि उपर दिए गए टोपिक का अध्ययन कर के आए और उसी टोपिक संबंधित प्रश्न पूछें।

सूचना : 1) यह शिविर जिन्होंने आत्मज्ञान लिया है ऐसे हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए ही है। माता-पिता के साथ बच्चे भी आ सकतें है। 2) शिविर रजिस्ट्रेशन अब बंध हो गया है। जो भी ईच्छुक महात्मा है, उन्हें अब सत्संग कोर्डिनेशन ओफिस, अड़ालज, गुजरात पर सीधा संपर्क करना होगा-फोन. 9574000946, 9924348880 **3) शिविर में भाग लेने के लिए शुल्क = रु.1200/- (सिर्फ आवास और भोजन का खर्च).** 4) केन्सलेशन चार्ज रु 200/- रहेगा.

बोटाद

7 व 9 दिसम्बर (गुरु व शनि) रात 8 से 11- **आप्तपुत्र सत्संग**

8 दिसम्बर (शुक्र) 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि** **संपर्क :** 9723699912

स्थल : त्रिवेणी खोडियार मंदिर के पास, विजय पेट्रोल पंप के सामने, पालियाद रोड, बोटाद, जि. बोटाद (गुजरात).

भावनगर

9 व 11 दिसम्बर (शनि व सोम) शाम 7 से 10- **आप्तपुत्र सत्संग**

10 दिसम्बर (रवि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

स्थल : जवाहर मैदान, वाघावाडी रोड, रिलायन्स मोल के सामने, भावनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9924344425

राजुला

11 व 13 दिसम्बर (सोम व बुध), रात 8 से 11- **आप्तपुत्र सत्संग**

12 दिसम्बर (मंगल) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : क्रिष्नानगर सोसायटी, गायत्री मंदिर के पास, राजुला, जि - अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 8140065111

सावरकुंडला

13 व 15 दिस. (बुध व शुक्र) रात 8-30 से 11-30- **आप्तपुत्र सत्संग**

14 दिस. (गुरु) शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : ओपन एयर थियेटर, जनता बाग के पास, सावरकुंडला, जि - अमरेली (गुजरात). **संपर्क :** 9427555476

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

गांधीनगर

28 अक्तू. (शनि), शाम 7-30 से 10-30- **सत्संग** (**टोपिक** -विरोधाभास मान्यताओं के सामने, दादावाणी - **मार्च 2003**)

29 अक्तूबर (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

30 अक्तूबर (सोम), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : च-3 सर्कल के पासवाला मैदान, बस डिपो के पास, सेक्टर -11, गांधीनगर (गुजरात). **संपर्क :** 9427609245

परम पूज्य दादा भगवान का 110वाँ जन्मजयंती महोत्सव - राजकोट शहर में

1 नवम्बर - शाम 5 -30 बजे से - **उद्घाटन समारोह**, तथा शाम 7-15 से 8-15 - **सत्संग**

2 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 - **सत्संग** (**टोपिक** - खेंच की पकड़ में 'खुद' गिरफ़्त, दादावाणी - **मार्च - 2011**)
शाम 7-30 से 10-**सत्संग** (**टोपिक** -अद्भुत अक्रम ज्ञान, अजायब अक्रम विज्ञानी, दादावाणी-**दिसम्बर - 2003**)

3 नवम्बर - सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 6-30 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

4 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 - **सत्संग** (**टोपिक** - आत्मदृष्टि के पुरुषार्थ की सीढ़ीयाँ, दादावाणी - **जुलाई - 2002**)
शाम 7-30 से 10 - **सत्संग** (**टोपिक** - मुक्ति का श्रेष्ठ अंग, क्लेश मिटाना, दादावाणी - **जून - 2009**)

5 नवम्बर - सुबह 9-30 से 12 - **सत्संग** तथा शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

6 से 8 नवम्बर शाम 5 से 10 चिल्ड्रन पार्क और थीम पार्क सिर्फ राजकोट के स्थानिक लोगों के लिए खुला रहेगा।

स्थल : ग्रीनलेन्ड चौराहे के पास, राजकोट-मोरबी रोड, राजकोट. **संपर्क :** 9426267365

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

जामनगर - त्रिमंदिर भूमिपूजन

7 नवम्बर (मंगल) - सुबह 10 से 11-30 - **त्रिमंदिर भूमिपूजन** **संपर्क :** 9924343687

स्थल : व्रजभूमि -1 के सामने, **TGES** स्कूल के पास, मानेकनगर, चेम्बर ओफ कोमर्स, राजकोट रोड, जामनगर.

सुरेन्द्रनगर

8 व 10 नवम्बर (बुध व शुक्र), रात 8 से 11- **आप्तपुत्र सत्संग** तथा **9 नवम्बर** (गुरु), शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**

स्थल : भक्तिनगर सर्कल ग्राउन्ड, 80 फीट रोड, सुरेन्द्रनगर, (गुजरात). **संपर्क :** 9979680471

भुवनेश्वर

25 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30- **सत्संग** तथा **26 नवम्बर** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

27 नवम्बर (सोम), शाम 6 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : KIIT ओडिटोरियम, KIIT युनिवर्सिटी केम्पस, पाटिया, भुवनेश्वर (उड़ीसा). **संपर्क :** 9582088626

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (उ.) पर सत्संग पारायण (शिविर)

23-30 दिसम्बर - सुबह 9-30 से 12 तथा शाम 4-30 से 7- **सत्संग**, रात 8-30 से 9-30 - **सामायिक**

31 दिसम्बर (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 3 दिसम्बर 2017 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। 3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

अक्तूबर 2017
वर्ष-12 अंक-12
अखंड क्रमांक - 144

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

अक्रम में फिसलने के तीन स्थान

ज्ञान मिलने के बाद संसार में फिसल जाने की तीन ही चीज़ें हैं, बाकी सब खाना-पीना, कपड़े पहनना, चश्मा लगाना, सिनेमा देखने जाना, भले ही कुछ भी खाना लेकिन एक मांसाहार नहीं कर सकते, दूसरा शराब की बूंद तक नहीं छू सकते और तीसरा, परस्त्री नहीं। परस्त्री का विचार भी आए तो भी प्रतिक्रमण करना। ये तीन चीज़ ही गिरने के स्थान हैं, अन्य कोई भी चीज़ नहीं गिराएगी। इनमें गिरेंगे तो फिर ठिकाना नहीं पड़ेगा। अन्य कोई गिरने के भयस्थान नहीं है। अन्य तो व्यापार-रोजगार करो, सब करो, चाय पीओ उसमें हर्ज नहीं है। वैसा कैफ नहीं चढ़ाए न! शराब पीने से आत्मा बेभान हो जाता है, फिर पूरा ज्ञान खत्म हो जाता है! फिर उसकी नर्कगति होती है और परस्त्री में भी ऐसा ही है। शराब, मांसाहार और परस्त्री संबंध में निबेड़ा नहीं आता, इसलिए यह नोट करके रखना।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.